चकमक

अक्टूबर, 1992

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 5.00





नीतू झा, पांचवीं, भोपाल



लोकेश कुन्डल, आठवीं, सन्दलपुर (देवास)

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-8 अंक-4 अक्टूबर, 1992

संपादक

विनोद रायना

सह-संपादक

राजेश उत्साही

कविता सुरेश

संपादन सहयोग

टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा

जया विवेक

उत्पादन/वितरण

कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा

एक प्रति : *पांच रुपए*

छमाही : *पच्चीस रुपए*

वार्षिक : *पचास रुपए*

डाक खर्च मुफ्त

चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।

कृपया चैक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,

ई-1/208, अरेरा कालोनी,

भोपाल-462016 (म.प्र.)

फोन : **563380**

कागज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

इस अंक में

विशेष

कविताएं

नाटक

हर बार की तरह

और यह भी

आवरण : शिवेंद्र पांडिया

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।



महावीर जैन, देहरिया साहू, देवास, म.प्र.

जन्मदिन

कल मेरा जन्मदिन आएगा
मेरा छोटा भाई कलकत्ता से आएगा

हम सब ख़ूब खुशी मनाएंगे
मेरे सारे मित्र मेरे घर आएंगे

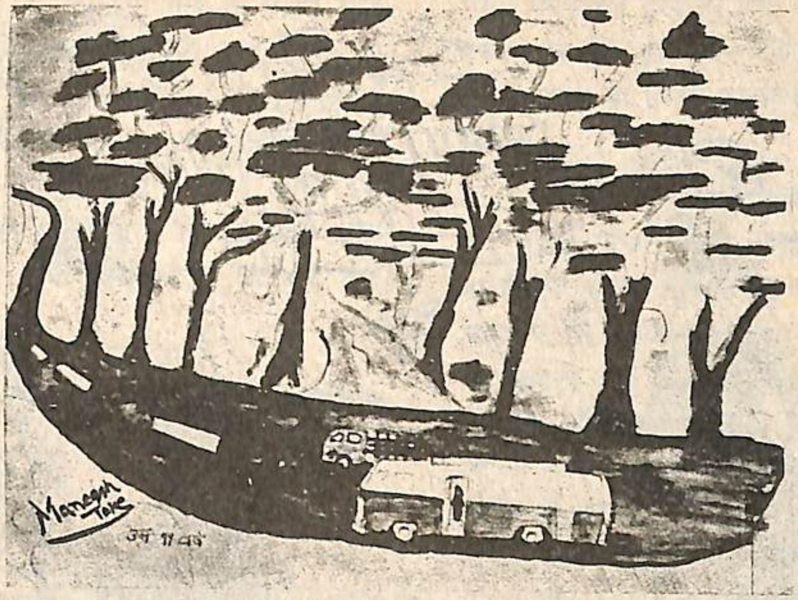
मुझे मिलेंगे बहुत सारे उपहार
ग़लती करने पर नहीं पड़ेगी मार

हम सब मिठाई और केक खाएंगे
शरबत से प्यास बुझाएंगे

इस दिन ख़ूब आएगा मज़ा
ग़लती क़रने पर नहीं मिलेगी सज़ा

❑ माधवी चेरियन, छठी, नई दिल्ली

लड़की की पढ़ाई



मनीष टोके, ग्यारह वर्ष, देवास, म.प्र.

एक दिन मैं स्कूल के लिए तैयार होकर बस स्टैंड पर गई। बस आने में थोड़ी देर थी। मेरे गांव में सिर्फ़ आठवीं तक ही स्कूल है। इसके बाद मेरे गांव से पांच-छह किलोमीटर दूर शाहगढ़ है। वहां पढ़ने के लिए जाना पड़ता है। बस आ गई। हम लोग बस में बैठे। मेरे साथ एक लड़की और पढ़ने के लिए जाती है।

हम दोनों आपस में बातचीत कर रहे थे। हमारे पास एक बूढ़ा आदमी बैठा था। उस आदमी ने हम लोग से पूछा, "क्यों, बच्ची कौन-सी कक्षा में पढ़ती हो?"

मैंने कहा, "दसवीं।"

यह सुनकर वह स्तब्ध-सा रह गया। हम लोग को कुछ अचरज हुआ। हम दोनों देखते रह गए। थोड़ी देर बाद वह ऐसे बोला जैसे पहाड़ टूट पड़ा हो, "क्यों तुम्हारे मां-बाप को शर्म नहीं आती?"

मैंने कहा, "दादा जी किस बात की शर्म? क्या आप ढंग से नहीं बोल सकते?"

बोला, "क्या ज़माना आया है। बच्चियां भी बूढ़ों से ज़बान लड़ाती हैं।"

मेरी सहेली ने कहा, "क्यों दादा आप क्या कह रहे हैं। हम लोग ने तो कुछ भी नहीं कहा।"

इतने में कंडक्टर आया। बोला, "क्या हुआ बच्ची?"

मैं कुछ भी नहीं बोल पाई। पर वह बूढ़ा आदमी झट से बोला, "कुछ नहीं हुआ। अरे भाई, इनके मां-बाप कैसे हैं जो लड़कियों को पढ़ाते हैं और वो भी दूसरे गांव में।"

इतना सुनकर मेरे कान ठंडे हो गए। कंडक्टर ने उससे कुछ कहा। वह आदमी बड़बड़ाता रहा। मैंने घर आकर मां को सब सुनाया।

❑ **कल्पना दुबे, ग्यारहवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.**

पापड़ वाला

एक धनीराम रहता था। उसका पापड़ का कारखाना था। वहां पापड़ बना करते थे। तीन औरतें पापड़ बनाती थीं। वह पापड़ बनाने में बहुत जल्दी करता था। वह पापड़ बेचता था। उसके पापड़ मारकेट (बाज़ार) में बिकते थे। धनीराम लालची और कंजूस था। वह पुराने लोगों को नौकरी से हटा कर नए लोगों को काम देना चाहता था। लेकिन वो हटते नहीं थे। अंत में वो पुराने हट गए और दूसरे भी नहीं आए। उसका कारखाना बंद हो गया। वह मारा-मारा फिरने लगा।

❑ **चिंटू टेम्भूर्णे, चौथी, उज्जैन, म.प्र.**

सिनेमा देखा



विजय कुमार देवड़, तणपुरा, होशंगाबाद, म.प्र.

जब मैं दस-ग्यारह साल का था, तब अपने पापा की जेब में से पांच रुपए का नोट चुराकर अपने एक दोस्त के साथ सिनेमा देखने गया। सिनेमा देखने में तो बहुत मज़ा आ रहा था लेकिन हम इस बात को सोच रहे थे कि घर जाने पर पापा बहुत पीटेंगे।

जब सिनेमा पूरा हो गया तो हम दोनों हॉल से निकले। वहां से मेरा घर तीन किलोमीटर दूर था। शाम हो चुकी थी। गाड़ी से जाने के लिए मेरे पास पैसे नहीं थे। मेरे दोस्त का घर क़रीब ही था। इसलिए मैं अपने दोस्त के घर रुक गया। रात भर तो डर से नहीं सोया कि घर जाने पर पिटाई होगी।

सुबह अपने गांव आया तो एक दोस्त ने कहा तुम्हारे पिता जी कल से तुम्हें सभी जगह तलाश कर चुके मगर तुम नहीं मिले। आज बहुत गुस्से में हैं। तब मैं डरते-डरते अपने घर गया। तो उल्टा ही हुआ, पापा हमें देखकर प्यार से बोले कि कहीं भी जाना हो तो कह कर जाया करो।

❑ राजीत कुमार, तेलमर, नालंदा, बिहार

मित्र

मेरा एक मित्र था, जिसका नाम अजय था। वह पैसा जीतने-हारने का खेल खेलता था। एक बार उसने मुझसे कहा तुम भी मेरे साथ खेलो। मैं तैयार हो गया। थोड़ी देर बाद मेरा बड़ा भाई आ गया। उसने पापा से कह दिया। पापा ने मेरी पिटाई लगाई। उस दिन से मैंने पैसों से खेलना छोड़ दिया। अब मैं उससे बोलता भी नहीं हूं।

❑ श्याम बिहारी खरे, पथरिया, दमोह, म.प्र.



बाग का बंदर

मेरे घर से थोड़ी ही दूर पर गांव के बाहर मेरा एक बहुत बड़ा बाग है। अब की बार आम का मौसम आया तो मैं अपने आम के बाग में जाता और उसकी रखवाली करता था। कहीं से एक बंदर आया और बाग में ऊधम मचाने लगा। इस डाल से उस डाल पर कूदता जिससे ख़ूब आम गिरते। इस तरह उस दिन आमों का ढेर लग गया। बंदर को देखकर गांव के बहुत से बच्चे इकट्ठे हो गए और हो-हल्ला मचने लगा। हो हल्ला सुनकर गांव के कुत्ते भी आ धमके।



विनीता पोटधन, भोपाल, म.प्र.

अब किसी बच्चे ने एक ढेला उठाकर बंदर की तरफ फेंका, फिर उसकी देखा-देखी दूसरे बच्चों ने ढेला फेंकना शुरू कर दिया। बंदर महाशय भी ऊपर से मुंह चिढ़ाने लगे तथा पेड़ों पर कूदना और तेज़ कर दिया। कुत्ते भी बंदर को देखकर भौंकने लगे। तभी बंदर ने एक पेड़ की पतली डाल पकड़ी और झूलने लगा वह डाल नीची थी इसलिए बंदर जी की पूंछ नीचे लटकने लगी। तभी एक कुत्ते ने झपट कर उसकी पूंछ पकड़ ली।

कुत्ते ने पूंछ ज़ोर से खींची। डाल पतली थी टूट गई, अब क्या, बंदर जी डाल सहित नीचे आ गए। फिर तो कुत्तों और बंदर के बीच अच्छा-ख़ासा युद्ध छिड़ गया।

बंदर जी खी–खी करके दौड़ते और कुत्ते भौं-भौं करके कभी पूंछ पकड़ते तो कभी बंदर मौक़ा देखकर एक पूंछ किसी कुत्ते के जमा देता। कुत्ता चीं-चीं करता भाग खड़ा होता। आख़िरकार बंदर को मौका मिला और सर्र से पेड़ पर चढ़ कर भाग निकला।

❑ सुगनराम गौड़, बारहवीं, देसूरी, पाली (राज.)

गोल मोल सी रोटी

गोल मोल सी रोटी है,
कुछ पतली कुछ मोटी है।

रोटी सबको भाती है,
दुनिया इसको खाती है।

रौटी से जीवन आता है,
रोटी सबकी माता है।

सबकी मेहनत रोटी है,
सबकी सेहत रोटी है,

गोल मोल सी रोटी है,
कुछ पतली कुछ मोटी है।

❑ दीप्ति पांडे, सातवीं, भटमुरना, धनबाद (बिहार)



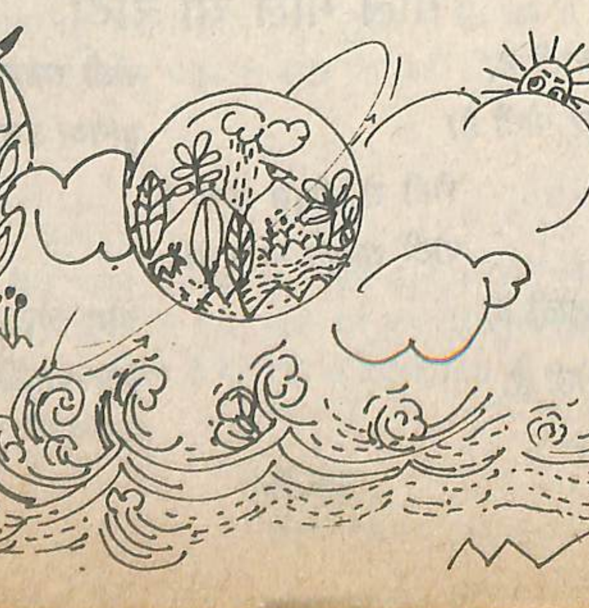


आंख-मिचौली

सूरज और पृथ्वी की टोली
खेल रही है आंख-मिचौली।
आसमान के सब तारों
में,सूरज भी एक तारा है।
धूप-प्रकाश हमें देता है
पक्का मित्र हमारा है।
अपनी पृथ्वी चारों ओर
सूरज के मंडराती है।
एक बरस में इस सूरज का
चक्कर एक लगाती है।
पृथ्वी यदि नहीं घूमे तो
ऋतुएं भी न आएंगी।
या तो दिन ही दिन होगा,
या रातें हमें उबाएंगी।
पृथ्वी, सूरज की हम जोली
खेल रही है आंख-मिचौली।

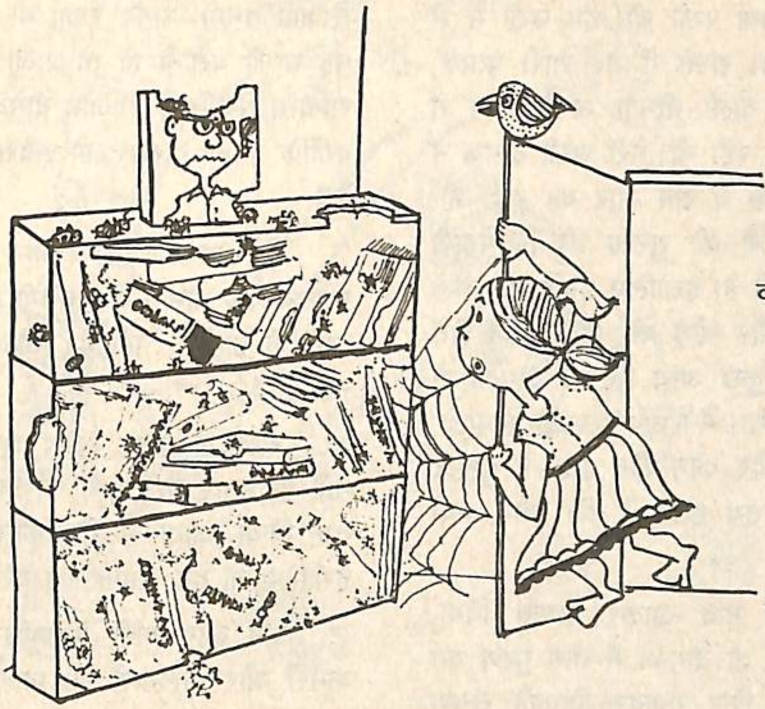
❑ अनवारे इस्लाम

चित्र : शोभा धारे



दीमकों का आश्चर्य लोक

पिछले दिनों चकमक के लिए कुछ सामग्री तैयार करके संपादक जी की मेज़ की ओर पहुंची तो देखा कि कुर्सी ख़ाली है। मैंने सोचा 'चाय पीने गए होंगे। सामग्री तो मेज़ पर रख जाऊं' और आगे बढ़ी। इतने में सामने से किसी की आवाज़ आई, "ख़बरदार! एक क़दम भी आगे बढ़ीं तो हम तुम पर धावा बोल देंगे।"



मैंने अचानक हो रहे इस हमले से घबराकर इधर-उधर झांका। कहीं कोई नज़र नहीं आया। फिर मेज़ के पीछे बनी अलमारी पर नज़र पड़ी तो मेरे मुंह से चीख निकल गई, "बचाओ ! बचाओ! दीमक।"

मेरे चिल्लाने से शायद दीमक भी घबरा गई। सब अपनी-अपनी जगह, ठिठककर मुझे घूरने लगीं। उन्हें भी यूं डरते देखकर मेरा डर थोड़ा कम हुआ। मैंने सोचा कि क्यों न इनसे दोस्ती की जाए। जब हम दोनों पक्ष ही एक दूसरे से डरने और एक दूसरे को डराने में बराबरी पर हैं तो दोस्ती में भी बराबर ही साबित होंगे।

पर यह डर भी था कि कहीं ज़्यादा उत्सुकता दिखाने से दीमक अपनी धमकी को सच न कर दिखाएं। मैंने तय किया कि चुपचाप बैठ़कर इन्हें थोड़ी देर निहारा जाए। डर भी बुरी आदत की तरह जाते-जाते ही जाता है! थोड़ी ही देर में दीमकें वापस अपने काम में लग गईं। वे काम के बीच में थोड़ी-थोड़ी देर बाद मुंह उठाकर मुझे देख लेतीं। जैसे तसल्ली कर रही हों कि मैं सिर्फ़ उन्हें निहार ही रही हूं, कुछ और तो नहीं कर रही।

आख़िर तंग आकर, या शायद उत्सुकतावश एक लंबी-पतली, बड़ी मुंह वाली दीमक ने पूछ ही लिया, "क्या बैठे-बैठे टुकुर-टुकुर घूर रही हो? जाओ, अपना काम करो।"

मैंने कहा, "मुझे तो अभी सिर्फ़ एक ही काम सूझ रहा है, तुम सबसे दोस्ती करना। पर हिम्मत नहीं हो रही है आगे बढ़ने की। कहीं ग़लत समझकर तुम सब सचमुच ही मुझ पर हमला न कर दो।"

उस दीमक ने तैश में आकर कहा, "तुम लोगों की यही बुरी आदत है। दोस्ती करने में, सही काम करने में भी डरते हो। यही बात थी तो पहले बताना था। मेरा और मेरे साथियों का कितना समय और दिमाग़ ख़राब हुआ तुम्हारी निगरानी में," इतना कहकर वह क़िताब के अंदर जाने को मुड़ी।

मैंने सोचा यही मौक़ा है। उसे हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। जल्दी से उस दीमक को रोकते हुए कहा, "नाराज़ क्यों होती हो बहन। अब भी क्या बिगड़ा है। चाहो तो कर लें दोस्ती।"

वह कुछ नर्म पड़ते हुए वापस मुड़ी और बोली, "अच्छा, आओ, मैं तुम्हें अपने साथियों से मिलाती हूं।"

फिर क्या था। मैं हाथ के काग़ज़ मेज़ पर छोड़ अपने नए दोस्त के साथ पहुंच गई उसके घर। अंदर जाकर मालूम हुआ कि जहां हम मिले थे वहां

तो वे सिर्फ़ किताबें खाने आई थीं। उनका घर तो आंगन में लगे पलाश के पेड़ के पास था। किताबों की अलमारी से लेकर पलाश के पेड़ तक इन लोगों ने एक पतली गली बना रखी थी। हम उसी में से चलकर बांबी में पहुंचे। रास्ते में ढेर सारी पतली, लंबी और बड़ी मुंह वाली दीमकें अपने काम में व्यस्त, इधर-उधर घूम रही थीं। मेरी सखी दीमक ने चलते-चलते बताया कि वे सब और वह ख़ुद भी, सिपाही दीमक हैं। बांबी की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी इन्हीं के कंधों पर होती है। इसीलिए इनके मुंह वाले अंग बहुत विकसित और थोड़े बड़े आकार के होते हैं। उसने राह चलते कुछ अन्य सिपाही दीमकों से भी मेरा परिचय करवाया। मैंने अपनी सखी से पूछा, "सिपाही के अलावा और कौन-कौन होता है तुम्हारे यहां? और ये कैसे तय होता है कि कौन क्या करेगा?"

सखी ने थोड़ा भाव खाकर जवाब दिया, "अच्छा सवाल है। वैसे तो दीमकों में तीन मुख्य वर्ग होते हैं। हम सिपाही, फिर मज़दूर जिनकी संख्या बहुत अधिक होती है, और राजा-रानी। पता नहीं यह कैसे तय होता है कि कौन क्या काम करेगा। हो सकता है कि ज़िम्मेदारी के बंटवारे के अनुसार ही हमारे शरीर की रचना विकसित होती है। या यह भी संभव है कि शारीरिक रचना के अनुसार ज़िम्मेदारी बंटती हो।" उसने बीच में सांस लेकर बात जारी रखी, "रानी और राजा दीमक, अंडे उत्पन्न करके हमारी प्रजाति को कायम रखते हैं। मज़दूर साथी घर बनाने और उसकी सारी गतिविधियों को चलाने का काम करते हैं।



अंडे से निकलकर कोई नवजात दीमक क्या बनेगी यह बस्ती की उस समय की स्थिति पर निर्भर करता है। अगर सिपाहियों की कमी पड़ गई हो तो सिपाही बनेगी। अगर राजा या रानी मर गए हों या नई बस्ती बसानी हो तो राजा या रानी बनेंगी। पर सामान्य स्थिति में नवजात दीमक मज़दूर ही बनते हैं क्योंकि इनकी ज़रूरत ही सबसे बड़ी मात्रा में पड़ती है।"

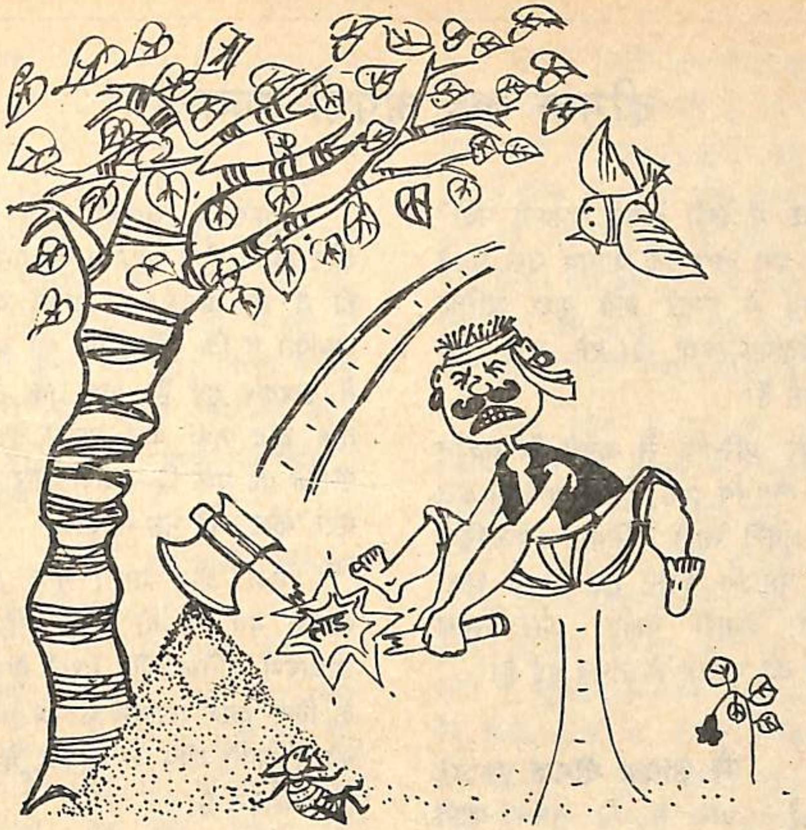
मैंने अचरज में पड़कर कहा, "अरे! इसका मतलब एक दीमक क्या बनेगी यह उसके पैदा करने वाले के हाथ में नहीं है? उसके अपने हाथ में भी नहीं है?"

सखी ने कहा, "और क्या! हम इतने स्वार्थी नहीं हैं। हमारे यहां सभी की ज़रूरतों को देखते हुए तय किया जाता है कि कौन क्या काम करेगा। इसीलिए तो हम "सामाजिक कीट" कहलाते हैं।"

हम लोग बांबी में पहुंच गए थे। चारों ओर कमरों और गलियारों की जाली सी बिछी थी। मेरे लिए तो यह जैसे कोई भुलभुलैया थी। मुझे लग रहा था कि यह घर नहीं कोई शहर है। आजू-बाजू, ऊपर-नीचे देखा। फिर एक दीवार को कोहनी से ठोककर देखने की कोशिश की तो इतने ज़ोर से लगी कि क्या बताऊं।

सखी ने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या ठोक-बजाकर देख रही हो! मज़बूती? हार मान जाओगी। हम लोग घर बनाने के लिए

मिट्टी और लुगदी में अपना थूक मिलाते हैं ताकि वह सीमेंट की तरह जम जाए। पर कुल मिलाकर वह सीमेंट से भी ज़्यादा पक्की हो जाती है। कुल्हाड़ी चलाओ तो चिंगारी तक छूटती है। कभी-कभी तो हमारे घर हटाने के लिए डायनामाइट का भी इस्तेमाल करना पड़ता है।"



मैंने कहा, "अच्छा! ऊपर से देखने में तो तुम्हारे घर कितने सुंदर होते हैं। कभी कुकरमुत्ते या छतरीनुमा, कभी किसी लंबी मीनार की तरह। पर यह कभी नहीं सोचा था कि इतने मज़बूत भी होते होंगे। यह बताओ कि तुम्हारे घर तो इतने मज़बूत हैं पर तुम सब शरीर से इतने दुबले-पतले और कमज़ोर क्यों हो?"

उसने ठंडी सांस भरकर कहा, "क्या बताऊं, बहन, यही तो रोना है। शरीर इतना कमज़ोर है इसीलिए तो इतना मज़बूत घर बनाना पड़ता है। जानती हो, गर्मी पंसद करने पर भी जहां हम धूप और सूखी हवा के संपर्क में आए कि पटापट मरना शुरू। इसी चक्कर में हमारा सारा जीवन ज़मीन और लकड़ी की खोह में गुज़रता है। हमारे शरीर पर रक्षा के लिए न कोई कठोर कवच होता है न आक्रमण के लिए कोई डंक आदि। अंधेरे में जीने के हम इतने आदी हो गए हैं कि हमारी लगभग दो हज़ार प्रजातियों में से ज़्यादातर ऐसी हैं जिनमें आंखें भी नहीं होतीं। पर इन सब कमियों के बावजूद हम लोग संगठित होकर काफ़ी बलवान साबित होते हैं।"

मैंने कहा, "सही है। पर एक बात समझ नहीं आई। हमसे तो कहा जाता है कि सेहत बनाने के लिए, ढेर सारा काम करने के लिए रोज़ दूध पीओ, हरी-पत्तेदार सब्ज़ियां खाओ आदि। तुम लोग सिर्फ़ काग़ज़ खाकर इतना काम कैसे कर लेती हो?"

दीमक ने हंसते हुए कहा, "काग़ज़ नहीं, हमारा मुख्य भोजन तो लकड़ी है। हां, कुछ प्रजातियां फफूंद वग़ैरह उगाकर भी खाती हैं। पर तुम शायद सोच रही होगी कि शारीरिक रचना से इतनी कमज़ोर दीमक लकड़ी पचाती कैसे होगी? दरअसल हमारी आंतों में एक तरह के एककोशीय जीव रहते हैं। उन्हें तुम लोग कुछ प्रोटोज़ोआ-वोटोज़ोआ कहते हो। लकड़ी पचाने का काम इन्हीं की करामात है। ऐसे में इन्हें भी भोजन मिल जाता है और हमें भी। किसी नवजात दीमक को जब वयस्क दीमक भोजन कराती है तो ये जीव, बच्चों के शरीर में भी प्रवेश कर जाते हैं और फिर ज़िंदगी भर साथ रहते हैं।"

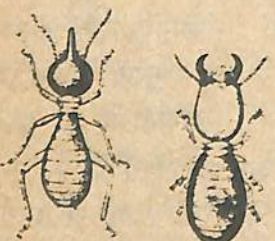
चलते-चलते हम लोग रानी दीमक के कमरे में पहुंच गए थे। वहां मैंने देखा कि रानी अंडे देने में व्यस्त है। लगातार अंडे दिए ही जा रही है, दिए ही जा रही है। मैंने कुछ सकुचाते हुए कहा, "रानी साहिबा, सलाम!"

रानी ने जल्दी से मेरे सलाम का जवाब दिया और फिर अंडे देने में जुट गई। मैंने देखा ढेर सारी छोटी-छोटी दीमकें रानी के द्वारा दिए हुए अंडों को उठा-उठाकर दूसरे कमरों में ले जा रही हैं। मेरी

दीमक कहें अपनी कहानी

क्या तुमने इस अंक में छपी हमारी कहानी पढ़ी? हमने भी पढ़ी और हमें लगा कि शायद उसे पढ़ने के बाद तुम्हारे मन में हमारे प्रति कुछ अधिक उत्सुकता, कुछ कौतुहल जगा हो। सो, तुम्हें कुछ और जानकारी दे रहे हैं।

शुरूआत हमारे अस्तित्व से करते हैं। यक़ीन करोगे? हम पिछले लगभग 25 करोड़ वर्षों से इस पृथ्वी पर हैं और अपनी सारी कमियों, कमज़ोरियों के बावजूद अपनी पहचान बनाए हुए हैं। ये सारी करामात दरअसल, हमारी एकता और साथ मिलकर काम करने की भावना से संभव हुई है।



मैं सैनिक दीमक हूं। मेरे बारे में भी तुमने काफ़ी कुछ सुना, पढ़ा पर कुछ बातें रह गईं। यह तो तुमने पढ़ा कि मेरे बड़े जबड़ों के लिए जगह बनाने के लिए ही मेरा सिर बड़ा है। पर इसका एक और फ़ायदा है। इसी बड़े सिर से मैं ख़तरे की घंटी का काम भी निकालती हूं। जब भी कोई ख़तरा आसपास मंडरा रहा हो तो मैं बांबी के गलियारों की दीवारों में अपना सिर पटक-पटक कर शोर मचाती हूं और बाक़ी सब को आने वाले ख़तरे के प्रति आगाह कर देती हूं।

कहते हैं, सबकी अपने काम के प्रति निष्ठा और लगन होनी चाहिए। पर यह सलाह कोई मुझे न ही दे तो अच्छा। मैं अपने काम के प्रति इतनी समर्पित हूं कि मेरे शरीर की बनावट ही उसे ध्यान में रखकर हुई है। यहां तक कि मैं अपना भोजन तक ख़ुद नहीं कर पाती। इस वजह से मज़दूर दीमक की एक ज़िम्मेदारी और बढ़ जाती है कि वह मेरा 'कौर' मेरे मुंह में रखे।

एक और बात। कुछ प्रजातियों में हमारा सैनिक वर्ग भी दो हिस्सों में बंटा होता है। एक साधारण सैनिक और दूसरे वे जो बचाव या सुरक्षा के लिए कुछ रसायन उत्पन्न करते हैं। इस रसायन को वे अपने कीप के आकार के सिर से फव्वारे की तरह छोड़ते हैं।

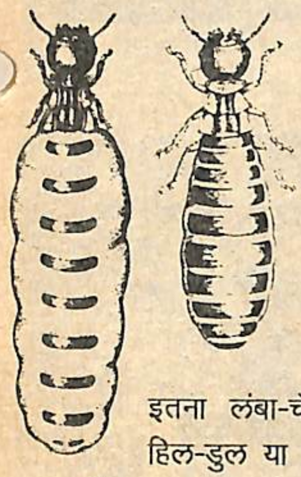


मैं द्वितीयक रानी हूं। मैं और द्वितीयक राजा काम तो मज़दूरों का ही करते हैं पर हम बाक़ी मज़दूरों और सैनिकों की तरह अंडे देने में या बच्चे पैदा करने में अक्षम नहीं होते। वैसे तो रानी की उम्र लगभग 50 साल की होती है। पर अगर कभी उसे कुछ हो जाए तो मैं उसकी जगह रानी बन जाती हूं और अपने कुनबे को आगे बढ़ाती हूं। ऐसे ही द्वितीयक राजा भी होता है।

सखी ने बताया कि ये मज़दूर दीमक हैं। ये ही अंडों की और फिर अंडे फूट जाने पर नवजात दीमकों की देखभाल करती हैं। रानी दीमक अन्य सभी दीमकों से कहीं अधिक लंबी-चौड़ी दिख रही थी, लगभग चार इंच लंबी और केले के बराबर मोटी। बाद में, कमरे से निकलते हुए एक और दीमक नज़र आई जो रानी से तो आकार में छोटी ही थी पर मज़दूरों के साथ काम नहीं कर रही थी। मेरे चेहरे पर प्रश्न का भाव पढ़कर सखी ने बाहर निकलते से ही कहा, "वो राजा था। जब कोई दीमक राजा या रानी बनती हैं तो शुरू में वे पंख वाले होते हैं और उड़ जाते हैं। चिड़ियों का भोजन बनने से बचते-बचाते, धूप सहते, ये अपने लिए साथी ढूंढ़ते हैं और साथ रहते हैं। फिर जब राजा-रानी के मेल के बाद, रानी अंडे देने की अवस्था में आती है तो दोनों पंख छोड़कर नई बस्ती बसाते हैं। ज़्यादातर प्रजातियों में रानी और



मैं एक साधारण **मज़दूर दीमक** हूं। मुझे अपने बारे में तो कुछ नहीं कहना है पर अपनी एक अनोखी बहन के बारे में बताना चाहती हूं। वैसे तो हम दीमकों को तुम मकान या सामान की लकड़ी को पहुंचाए गए नुकसान के लिए ही पहचानते होगे। पर जानते हो, हमारे घर आमतौर पर लकड़ी से नहीं, मिट्टी से ही बने होते हैं-चाहे वे ज़मीन के अंदर हों या ज़मीन के ऊपर। हां, हमारी कुछ उत्तरी अमरीकी बहनें ऐसी भी हैं जो पेड़ पर चढ़कर लकड़ी की खोह में घोंसला बनाकर रहती हैं।



मैं हूं रानी दीमक। साथ में राजा का चित्र है जो डील-डौल में मुझसे छोटा है। मेरी हालत तो तुम देख ही रहे हो। अंडों से मेरा पेट किस क़दर भरा पड़ा है। और इसकी वजह से मेरा शरीर इतना लंबा-चौड़ा हो गया है कि मैं हिल-डुल या घूम-फिर भी नहीं सकती। बस यहीं रहकर अपना काम करती रहती हूं। ये मज़दूर ही मेरी और अंडों की साफ़-सफ़ाई, रख-रखाव, आदि का ख़्याल रखते हैं। क्या तुम अंदाज़ लगा सकते हो कि मैं रोज़ लगभग कितने अंडे देती हूं? शर्त मत लगाओ, हार जाओगे! मैं लगभग तीस हज़ार अंडे रोज़ दे डालती हूं।

जब मैं किसी कारणवश मृत्यु से पहले ही अंडे देने में असमर्थ हो जाती हूं, तो हमारे यहां कुछ ऐसी व्यवस्था है कि मज़दूर मुझे खाना 'परोसना' बंद कर देते हैं और मैं अंततः भूख से मर जाती हूं। मरने के बाद भी अपने कुनबे की सेवा का सिलसिला ख़त्म नहीं होता। मेरा शरीर अन्य लोगों के भोजन के काम आता है। इस तरह से नई रानी के लिए जगह भी बन जाती है और मेरा शरीर भी काम आ जाता है।

तुम लोग शायद हर चीज़ को दुनियावी नज़रिए से ही देखते हो। तुरंत क्या फ़ायदा या नुकसान हो रहा है उसी को आंकने की कोशिश करते हो, दूर की नहीं सोचते। इसीलिए तुम हमें अपना दुश्मन मान बैठे हो। और वह इसलिए कि हम तुम्हारे मकान, सामान आदि की लकड़ी को चट कर जाते हैं, तुम्हारी किताबें, काग़ज़-पत्तर काट लेते हैं। पर कभी सोचा है, हमारी लकड़ी काटने की बुरी आदतों से ही तुम्हें परोक्ष रूप से कितना फ़ायदा होता है। घने जंगलों में, जहां हमारे काम में बाधा डालने वाले तुम जैसे लोग नहीं होते हैं, हम गिरे या सूखे हुए पेड़ों की लकड़ी को भोजन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। हमारे इस काम से नए पेड़ों को बढ़ने के लिए लगातार खाद मिलता रहता है। इस तरह से हम जंगल में पेड़ों के ऊगने, नष्ट होने और फिर ऊगने के चक्र को बनाए रखने में मदद करते हैं।

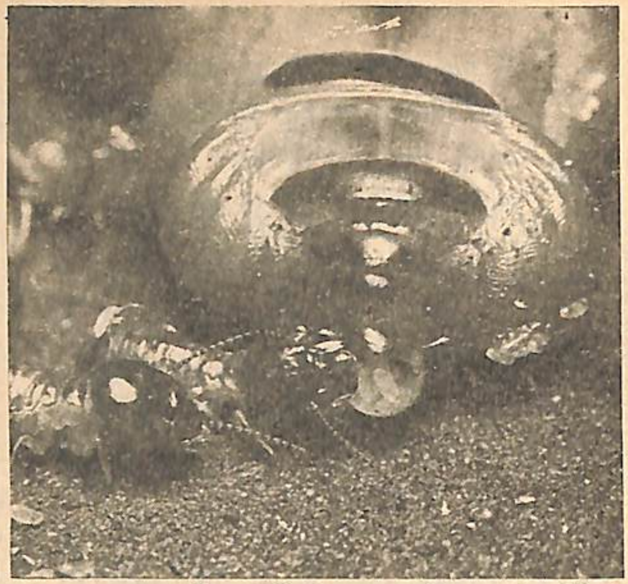
सोचो, कहां तो हम छोटे-से, निर्बल-से जीव जंगल बचाने में लगे हैं, और कहां तुम लोग जंगलों को काटकर साफ़ करने पर तुले हुए हो।

राजा बीच में बने ख़ास कमरे में रहते हैं और अंडे उत्पन्न करते हैं।"

काम के बंटवारे की यह व्यवस्था मुझे कुछ जानी-पहचानी लगी। फिर ध्यान आया कि चींटियों में भी ठीक ऐसे ही वर्ग होते हैं- सिपाही, मज़दूर और रानी-राजा। मैंने यह बात सखी को बताई तो उसने भी इसकी पुष्टि की। बोली, "हमारे अलावा इस तरह के काम का बंटवारा सिर्फ़ कुछ ही कीड़ों में दिखता है। आमतौर पर मधुमक्खी या भौंरे की जाति के कुछ कीड़े तथा चींटी बहन। कई लोग हमें चीटियों का रिश्तेदार समझते हैं। अंग्रेज़ों ने तो हमारा नाम ही व्हाइट एंट (सफ़ेद चींटी) रख दिया है, जबकि न तो हमारी सारी प्रजातियां सफ़ेद होती हैं न ही हम चींटी के रिश्तेदार हैं। हां, हमारी कुछ प्रजातियां ज़रूर सफ़ेद रंग की होती हैं। हम तो तिलचट्टा



रानी दीमक, जो एक दिन में तीस हज़ार अंडे देने की क्षमता रखती है।



मज़दूर दीमक रानी दीमक द्वारा दिए जा रहे अंडों को बटोरकर रखते हैं।



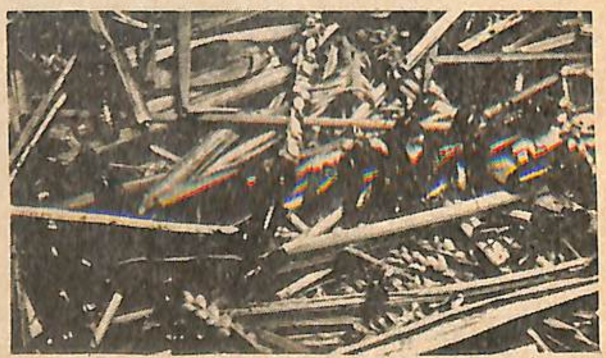
अंडे और उनसे निकले नवजात दीमक।



पंखों वाले दो वयस्क दीमक उड़ने की तैयारी में।



कुछ दीमक की प्रजातियां लकड़ी में ही अपना घर बनाती हैं। ऐसी ही प्रजाति का एक जोड़ा नई कालोनी बनाने की तैयारी में।



फसल खाने वाली दीमक।



सैनिक दीमक अपने घर की रक्षा करते हुए।

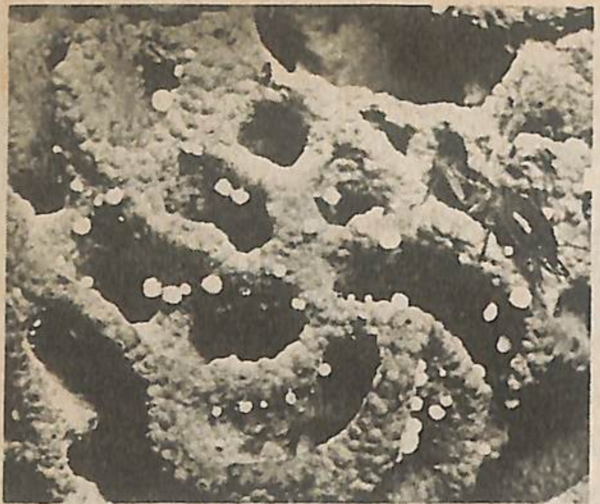


(कॉकरोच) परिवार के हैं।"

देर हो चली थी। मैंने अपनी सखी से कहा, "काफ़ी देर हुई। वहां सब मेरी ढुंढाई मचा रहे होंगे। चलो, बाहर का रास्ता बता दो। अभी तो इन गलियारों में मैं खो-सी गई हूं। बाहर निकलने में काफ़ी समय लगेगा। एक और बात। तुम्हारी यह अंधेरी बंद दुनिया इतनी हवादार कैसे है?"

सखी ने इतराकर जवाब दिया, "सिर्फ़ हवा ही क्यों। हमारे यहां पानी का भी ख़ास इंतज़ाम होता है। पर तुमने हवा के बारे में पूछा है तो तुम्हें हमारी एक अफ़्रीकी बहन के घर के बारे में बताती हूं। वह हम सबमें हवा की व्यवस्था के लिए मशहूर है। उसका घर अंदर से खोखला और टीले के आकार का होता है। यह घर खंभों पर टिका होता है। टीले की दीवारों में बारीक़ नालियां होती हैं। दीमकों के शरीर की क्रिया के कारण अंदर की हवा गर्म होकर ऊपर उठती है। यह हवा अन्य बारीक़ नालियों से गुज़रकर टीले के निचले हिस्से में पहुंचती हैं। ये नालियां टीले की दीवार के बाहरी तरफ होती हैं और इनकी बाहरी दीवार बिल्कुल पतली झिल्ली के समान होती हैं। इतनी पतली कि गर्म हवा में से कार्बन डाईऑक्साइड झिल्ली को पारकर बाहर की हवा में मिल जाती है और बाहर से ऑक्सीजन अंदर की हवा में। मतलब यह कि सांस लेने पर हवा के आदान-प्रदान का जो काम तुम मनुष्यों के फेफड़े करते हैं वही काम हमारा पूरा-का-पूरा घरौंदा करता है। मज़दूर साथी लगातर व्यस्त रहकर इन नालियों को खोलते-बंद करते रहते हैं ताकि हवा का बहाव नियंत्रित रहे।"

मैंने बांबी के अंदर काफ़ी सीलन महसूस की थी। सखी ने भी पानी की व्यवस्था का ज़िक्र किया। फिर हवा के संचालन की कहानी इतनी रोचक निकली तो नमी-पानी के बारे में भी पूछ ही डाला। सखी आगे-आगे चलकर रास्ता बता रही थी। वैसे ही चलते हुए बोली, "नमी बनाए रखने के भी बहुत अलग-अलग तरीक़े हैं। हमारी कुछ बहनें भोजन के लिए फफूंद उगाती हैं। इससे दोहरा फ़ायदा होता है। भोजन देने के अलावा फफूंद अतिरिक्त नमी सोख लेती है। फिर जब हवा सूखी हो तो इस नमी को छोड़ देती है। हमारी रेगिस्तानी बहनें तो वाकई कमाल की हैं। वे रेत में चालीस से पचास मीटर तक गहरी नली बना लेती हैं जो पानी के स्रोत तक



दीमकों के घर में फफूंदी का बगीचा। फफूंदी से वे अपना भोजन भी तैयार करती हैं।

पहुंच जाती है। वहां से मज़दूर साथी पानी ढोकर ऊपर घरौंदे तक लाते हैं। फिर शरीर की क्रिया से पैदा हुई गर्मी के कारण यह पानी भाप में बदल जाता है और नमी बनाए रखता है।"

बात करते-करते पता ही नहीं चला कि हम लोग बांबी के मुंह तक आ गए थे। बाहर की खुली हवा में मैंने एक लंबी सांस ली और अपनी सखी से अलविदा कहा। दोबारा उसके घर ज़रूर जाने का वादा करके मैं कदम बढ़ाकर कमरे में घुसी तो देखा, संपादक जी दीमकों द्वारा खाई गई किताबों को लिए परेशान से बैठे थे!

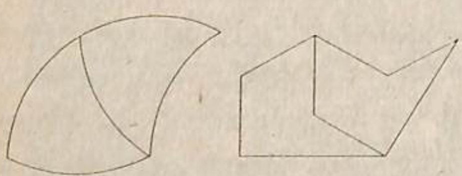
❑ दुलदुल विश्वास

व्यंग्य चित्र : शिवेंद्र पांडिया

इस लेख में आए चित्र टाइम लाइफ नेचर सीरीज़; साइमन एंड शूस्टर्स गाइड टू इनसेक्ट्स से साभार।

माथापच्ची : हल सितंबर, 92 अंक के

1.



2. सबसे पहले जानवर नं. 2 को ख़ाली कोठरी में ले जाना होगा। फिर नं. 6 को 2 के जाने से ख़ाली हुई कोठरी में ले जाना होगा। नं. 6 के जाने से ख़ाली हुई कोठरी में नं. 3 को लाना होगा। यह क्रम आगे इस तरह चलेगा- 4, 6, 3, 5, 1, 3, 6, 4, 5, 6,3, 1, 6, 5, 4, 3, और 2.

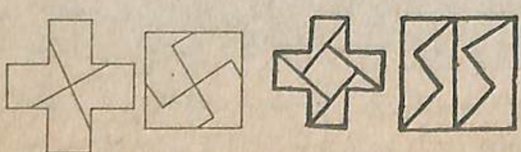
3.



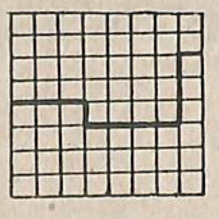
4. दी हुई आकृतियां अंग्रेज़ी अंकों से बनी हैं। अगली आकृति यह होगी-



5.



6.



7. कुल छह धावक थे।

8. छल्ला नं. 2

वर्ग पहेली 16 का हल

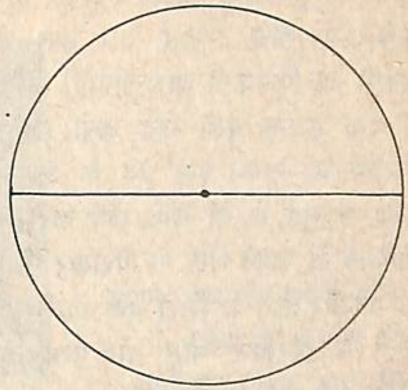
1छ		2बा	तू	3नी		4म	5ग	घ
6न	स	ल		7ल	ता		म	
न		टी		कं		क	9न	क
	10बा		11ग	ठ	12न			ला
13प	ग	प	ग		14ग	प	15श	प
या			16न	17का	र		क	
18म	19ता	री		नौ		20ज़		21न
	री		22प	का		23ह	र	ज़ा
24न	ख़	रे		25न	हा	न		रा

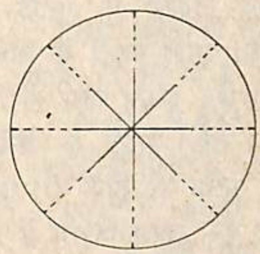
वर्ग पहेली-16 का सही हल इन पाठकों ने भेजा : विजया केलकर, झांसी; निर्मल गोयल, पटना; मधुमिता यादव, ओमपुर, बिलासपुर; शत्रुघनलाल यादव, कोरकोमा, बिलासपुर। इन्हें उपहार में चकमक तीन माह तक भेजी जाएगी। अगर पहले से ही ये चकमक के ग्राहक हैं तो इनका चंदा समाप्त होने पर तीन महीने के लिए और बढ़ा दिया जाएगा।

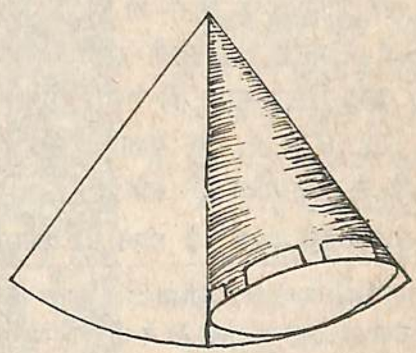
एक मज़ेदार खेल

पवन चकरी









तुमने चूहे-बिल्ली या कुत्ते-बिल्ली का मज़ेदार खेल तो खेला ही होगा, जिसमें किसी पेड़ या खंभे का गोल चक्कर लगाते हुए बिल्ली, चूहे को या कुत्ता, बिल्ली को पकड़ने की कोशिश करता है। आओ हम एक ऐसा खिलौना बनाएं जिसमें यह खेल लगातार चलता रहता है। यह खिलौना हवा से चलता है।

इसे बनाने के लिए तुम्हें जो सामान जुगाड़ना है, वह है- बॉल पेन की दो खाली रीफ़िल, बड़ी कार्डशीट या मोटा काग़ज़ (पुराना पोस्टकार्ड भी चलेगा), पतला तार, सुई, दो छोटी कील, परकार, लकड़ी का एक गुटका (लगभग 2×2×3 से.मी. का), एल्यूमिनियम या टीन की पतली पट्टी, ब्लेड, कैंची, गोंद आदि।

अब एक रीफ़िल लो। इसके एक सिरे पर नोक लगी ही होगी। दूसरे सिरे पर दूसरी रीफ़िल की नोक निकालकर लगा दो। इस तरह यह दो मुंही रीफ़िल बन जाएगी। अब रीफ़िल में किसी एक सिरे से 2.5 से.मी. की दूरी पर सुई से एक आर पार छेद कर लो। इस छेद में तार का एक छोटा सा टुकड़ा डालकर उसे 'U' आकार में मोड़ लो। इसे हम **पहला सिरा** कहेंगे। इसी तरह दूसरे सिरे से लगभग 1.5 सेमी की दूरी पर एक छेद करो और इसमें भी एक तार का टुकड़ा डालकर 'U' आकार में मोड़ लो।

अब परकार की सहायता से मोटे काग़ज़ के दो गोले काटो। एक 5 से.मी. व्यास का और दूसरा 7 से.मी. व्यास का।

अब बड़े गोले के केंद्र में एक ऐसा छेद करो, जिसमें से रीफ़िल आरपार जा सके। इस छेद के आसपास सुई से एक सीधी रेखा में दो छोटे छेद करो। अब इस गोले को रीफ़िल के दूसरे सिरे से पिरोकर तार के ऊपर लाओ। और तार के सिरों को छेदों में पिरोकर मोड़ दो। ऐसा करने से काग़ज़ का यह गोला रीफ़िल के साथ बंध जाएगा।

अब काग़ज़ से एक इतना बड़ा कोन (शंकु) बनाओ कि वह रीफ़िल में लगाए गए दोनों तारों के बीच की जगह में आ जाए। कोन के चौड़े सिरे के किनारे को इस तरह काटो कि झालर जैसी बन जाए। पतले वाले सिरे पर एक छोटा-सा छेद करो और इस सिरे को ऊपर की तरफ रखते हुए रीफ़िल के पहले सिरे से पिरो दो। झालर पर गोंद लगाकर उसे बड़े गोले से चिपका दो।

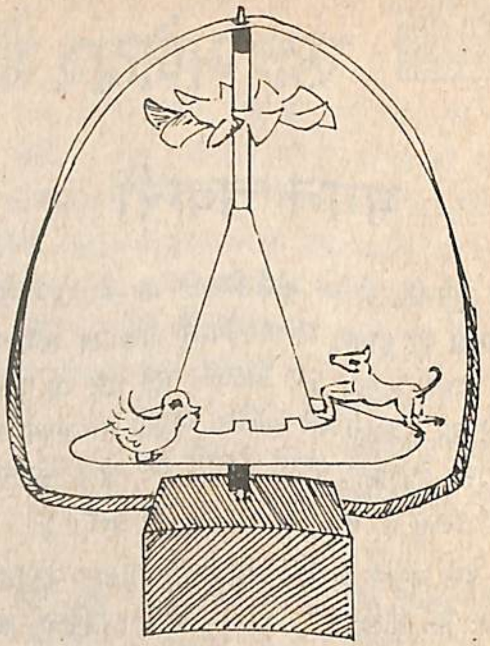
अब छोटे वाले गोले का केंद्र बिंदु पता करो

और केंद्र से रेखाएं खींचकर गोले को आठ बराबर भागों में बांट लो। अब इस गोले को इन रेखाओं पर से आधी दूरी तक काटो। कटे हुए हिस्सों को क्रमशः नीचे-ऊपर-नीचे.....मोड़ दो। इस तरह यह एक चकरी या फिरकनी बन जाएगी। अब चकरी के केंद्र में एक इतना बड़ा छेद करो कि इसे रीफ़िल में पिरोया जा सके। इस छेद के आसपास एक सीधी रेखा में सुई से दो छोटे छेद करो। अब चकरी को रीफ़िल के पहले सिरे से पिरोकर नीचे लगे तार तक ले जाओ। तार के सिरों को चकरी में किए गए छोटे छेदों में पिरोकर मोड़ दो। ऐसा करने से चकरी रीफ़िल में बंध जाएगी।

अब लकड़ी के गुटके पर टीन की पट्टी लगानी है। पहले पट्टी के बीचों-बीच कील से छेद कर लो। छेद इतना बड़ा हो कि उसमें रीफ़िल की नोक आ सके। पट्टी के दोनों सिरों को चित्र के अनुसार गुटके पर ठोक दो। गुटके के बीचों-बीच भी एक छेद इस तरह करना है कि वह पट्टी में बने छेद के ठीक नीचे हो।

अब रीफ़िल के सिरों को पट्टी और गुटके में बने छेदों में फंसा कर सीधी खड़ी करो। ध्यान रहे चकरी वाला सिरा ऊपर की तरफ रहेगा। रीफ़िल के दोनों सिरे छेदों में इस प्रकार रहेंगे कि रीफ़िल आसानी से गोल-गोल घूम सके।

अब नीचे वाले बड़े गोले पर काग़ज़ से एक



जगह कुत्ता और एक जगह बतख की आकृति बनाकर लगा दो। तुम चाहो तो कोई और जानवरों की आकृति बनाकर भी लगा सकते हो।

बस अब, इस खिलौने को किसी ऐसी जगह पर रखो जहां हवा आती हो। हवा लगते ही रीफ़िल के साथ दोनों काग़ज़ के गोले घूमने लगेंगे और ऐसा लगेगा कि कुत्ता, बतख के पीछे दौड़ रहा है।

❑ **एच.के. बिस्वास**

अगस्त अंक में प्रकाशित इस कार्टून के संवाद हमें कई पाठकों ने लिखकर भेजे हैं। ये तीन संवाद पसंद आए :-

1. अरे मुनिया रस्सी कूद रही है। अभी बताती हूं।
2. क्यों री मुनिया की बच्ची, रस्सी कूद रही है, चल घर चल बताती हूं तुझे।
3. अरी मम्मी, आपको मालूम नहीं, कल कलेक्टर आया था, उन्होंने कहा, जो भी माता-पिता बच्चों को मारेगा, उन्हें डंडे से मारेंगे।

❑ **विजयकिशोर जायसवाल, हाटपीपल्या, देवास**

1. ओहो ये पिंकी भी।
2. पिंकी जब तुम कोई गलती करती हो तो मेरे सिर का एक बाल सफ़ेद हो जाता है।
3. तब तो मम्मी आपने भी बहुत-सी गलतियां की होंगी, तभी तो नानी के सभी बाल सफ़ेद हो गए।

❑ **संजय यादव, नवमीं, पानसेमल, खरगोन**

1. कैसे समझाऊं इसे!
2. तुम्हें कितनी बार कहा, स्कूल के वक्त मत खेला करो। चलो जाओ स्कूल।
3. मां आज तो रविवार है!

❑ **मुफज्जल हुसैन, भौंरासा, देवास**

इन्हें उपहार स्वरूप तीन माह तक चकमक भेजी जाएगी।



अमरूद



हर पेड़ अपनी उपयोगिता या गुणों के कारण जाना जाता है। कुछ पेड़ अपने फलों के कारण, तो कुछ फूलों के कारण जाने जाते हैं। कुछ अपनी लकड़ी की उपयोगिता के लिए, तो कुछ अपने पत्तों या गोंद जैसी चीज़ों के लिए।

अमरूद ऐसे पेड़ों में से है जो अपने फल के लिए ख़ास तौर पर जाना जाता है। इसका पेड़ छोटा होता है। तना हल्के-भूरे रंग का होता है। इसकी छाल छोटे-छोटे टुकड़ों में आप से आप भोजपत्र की भांति उतरती रहती है। पत्ते गहरे हरे रंग के और आकार में लंबे होते हैं। फूल सफ़ेद होते हैं।

इसका फूलने और फलने का समय विभिन्न भागों में अलग-अलग है। पूरे भारत में साल भर कहीं न कहीं अमरूद फलता दिखाई दे सकता है। लेकिन जाड़ों में फल अधिक बड़े और स्वादिष्ट होते हैं। बरसात में फलों की तादाद ज़्यादा होती है, पर आकार में वे छोटे होते हैं। कच्चा फल हरा और पकने पर पीले रंग का हो जाता है। अंदर गूदा और बीज होते हैं। कुछ क़िस्में ऐसी भी पाई जाती हैं जिनमें बीज बहुत कम या बिल्कुल नहीं पाए जाते। अमरूद का अचार और मुरब्बा भी डाला जाता है। चटनी और सब्ज़ी के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।

अमरूद का पेड़ दक्षिण अमरीका से भारत आया है। वास्तव में यह ऐसे इलाकों में बहुत अधिक मात्रा में होता है जहां गर्मी पड़ती है। पहाड़ों पर यह नहीं पाया जाता।

अमरूद के पेड़ की छाल और सूखे पत्तों से कपड़े रंगे जाते हैं। इसका गेरूआ रंग होता है। छाल का इस्तेमाल दवा के रूप में भी किया जाता है।

अमरूद के पेड़ की लकड़ी सख़्त होती है। इससे कई तरह की चीज़ें बनाई जाती हैं।

अमरूद के पेड़ की एक ख़ासियत यह भी है कि इसे बीज और कलम दोनों तरीक़ों से लगाया जा सकता है। कलम से लगाया गया पेड़ दो साल में ही फल देने लगता है।

देश भर में अमरूद की कई क़िस्में पाई जाती हैं। जैसे इलाहाबाद, लखनऊ, बाबई आदि जगहों पर पैदा होने वाले अमरूद जगह के नाम से बेचे जाते हैं।

अमरूद के पेड़ को अंग्रेज़ी में **गुआवा ट्री** कहा जाता है।

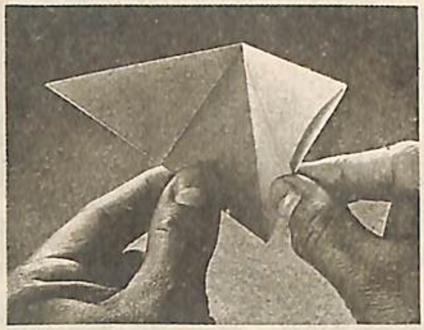
□□□

खेल काग़ज़ का

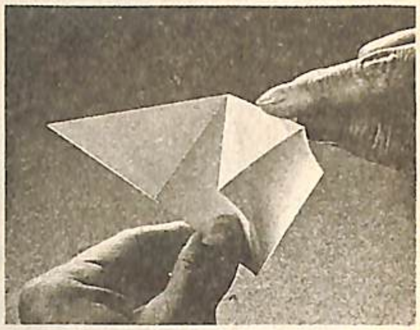
सितारा



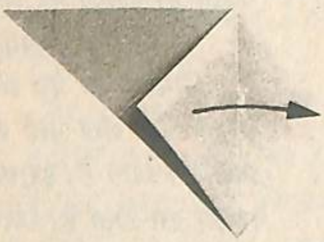
1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। चित्र में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से काग़ज़ को मोड़कर निशान बना लो और फिर उसे खोलो। काग़ज़ को किसी एक कर्ण रेखा पर से मोड़ो। एक त्रिभुजाकार आकृति मिलेगी।



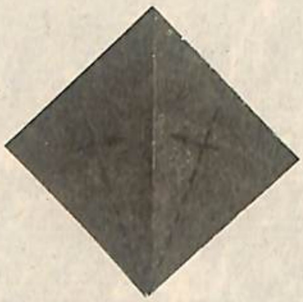
2. त्रिभुज को ठीक बीच से दो हिस्सों में बांटती हुई एक रेखा मिलेगी। त्रिभुज के दाहिने हिस्से को इस रेखा पर से मोड़ते हुए ऊपर उठाओ।



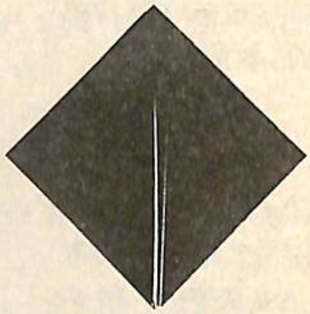
3. उठे हुए हिस्से को बीच में से खोलो। और ऊपर का सिरा नीचे दबाओ ताकि एक वर्ग बन जाए।



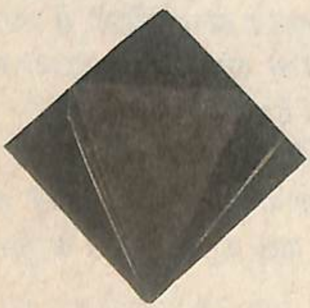
4. वर्ग पर पहले से ही कर्ण बना होगा। वर्ग का बाईं ओर वाला हिस्सा कर्ण पर से मोड़कर दाईं ओर ले जाओ। त्रिभुज के बाएं हिस्से पर भी चित्र 2 से 4 तक की क्रिया दोहराओ।



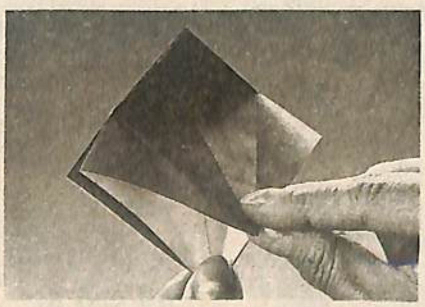
5. जो आकृति तुम्हें मिलेगी उसे पक्षी आधार कहते हैं। वैसे तो इससे कई चीज़ें बनती हैं पर उनमें ज़्यादातर पक्षी ही होते हैं। इसलिए इसे **पक्षी आधार** कहते हैं। अब टूटी हुई रेखाओं पर से ऊपर की सतह के बाएं और दाहिने हिस्सों को [illegible]र की दिशा में मोड़ो।



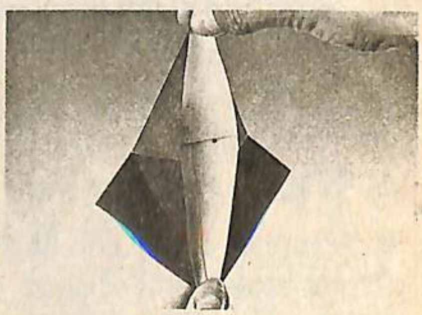
6. ऐसे। आकृति में ऊपर की तरफ जो छोटा त्रिभुज बचता है उसे भी टूटी रेखाओं पर से अपनी ओर मोड़ो।



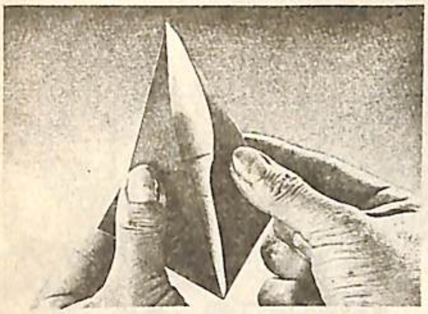
7. अब चित्र 5–6 में बने तीनों मोड़ खोल लो।



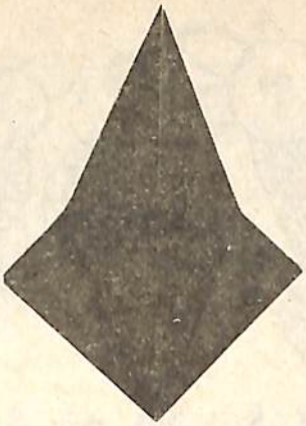
8. अब ऊपर की सतह के निचले सिरे को पकड़कर ऊपर की तरफ धीरे-धीरे उठाओ।



9. इस तरह



10. और दाईं व बाईं तरफ की फूली हुई सतहों को दबाकर चपटा कर दो।



11. मोड़ों को पक्का कर लो और आकृति को पलटकर फिर वही क्रिया (चित्र 5 से 11) दोहराओ। आगे के चित्रों में छींटदार काग़ज़ का इस्तेमाल किया गया है।



12. जो आकृति तुम्हें मिली वो ऐसी होगी। बाईं ओर की ऊपरी सतह को बीच की रेखा पर से मोड़ते हुए दाईं ओर ले जाओ। आकृति को पलटकर फिर वही क्रिया करो।



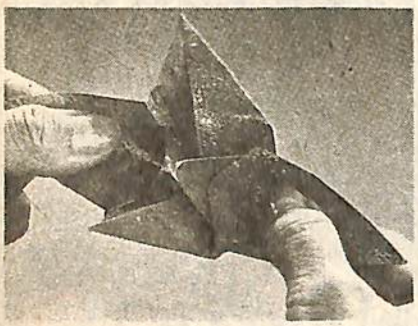
13. टूटी रेखाओं पर से नीचे वाले हिस्से की ऊपरी सतह को ऊपर मोड़ो। आकृति को पलटकर फिर वही क्रिया दोहराओ।



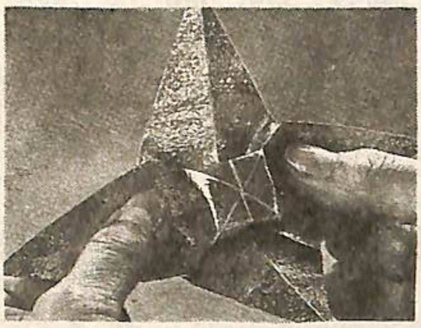
14. ऐसी आकृति मिलेगी तुम्हें! अब टूटी हुई रेखाओं पर से ऊपरी सतह के दोनों निचले सिरों को मोड़कर बीच की रेखा तक लाओ। आकृति को पलटकर यही क्रिया दोहराओ।



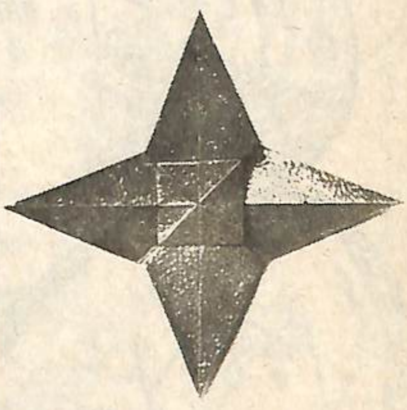
15. ऐसी आकृति मिलेगी।



16. अब आकृति को चित्र में दिखाए तरीक़े से दोनों हाथों में पकड़ो। अंगूठे आकृति के अंदर रहेंगे और उंगलियां बाहर।



17. अब आकृति को धीरे-धीरे खींचते हुए खोलो। बीच में एक वर्ग बनता दिखाई देगा।



18. जब वर्ग पूरा बन जाए तब आकृति को नीचे रखकर अंगूठे से दबाकर पक्का कर लो। बन गया सितारा।



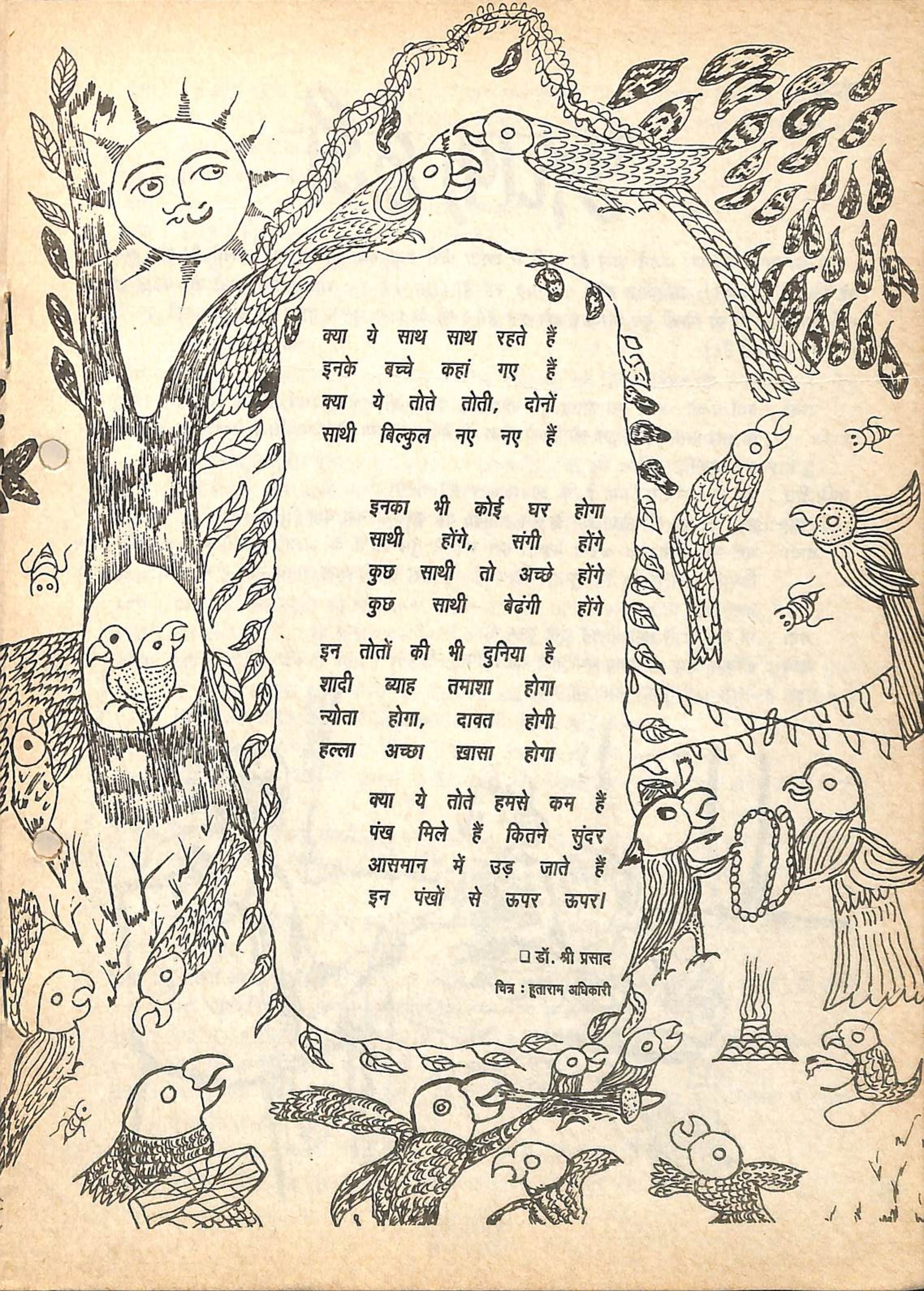
तोता तोती

सुंदर सुंदर पंखों वाला
तोता मुंडेरे पर आया
फिर तोती भी उड़कर आई
जाने क्या उससे बतियाया

रोज़ सुबह जब सूरज आता
ये दोनों अक्सर आते हैं
थोड़ी देर बैठते हैं ये
खुश होकर पर फैलाते हैं

एक दूसरे से क्या कहते
इसको कौन बता पाएगा
तोती यहां कहां से आई
तोता अभी कहां जाएगा

शायद साथ साथ ही दोनों
किसी बाग में जाएं उड़कर
मीठे मीठे आम बाग में
शायद दोनों खाएं मिलकर



क्या ये साथ साथ रहते हैं
इनके बच्चे कहां गए हैं
क्या ये तोते तोती, दोनों
साथी बिल्कुल नए नए हैं

इनका भी कोई घर होगा
साथी होंगे, संगी होंगे
कुछ साथी तो अच्छे होंगे
कुछ साथी बेढंगी होंगे

इन तोतों की भी दुनिया है
शादी ब्याह तमाशा होगा
न्योता होगा, दावत होगी
हल्ला अच्छा ख़ासा होगा

क्या ये तोते हमसे कम हैं
पंख मिले हैं कितने सुंदर
आसमान में उड़ जाते हैं
इन पंखों से ऊपर ऊपर।

□ डॉ. श्री प्रसाद

चित्र : हुताराम अधिकारी

पुस्तक हंडी

[शाम का समय है। छः बजने वाले हैं। घड़ी में कांटा जैसे रुक गया है। छः घंटे बोलते हैं। एक कमरे में दो बच्चे (भाई-बहन), अभिजीत और नंदा पढ़ रहे हैं। (उम्र 10-12 साल) उन दोनों का पढ़ाई में मन नहीं लग रहा है। वो किसी का इंतज़ार कर रहे हैं। उन्हीं के पास उनके दादा जी आरामकुर्सी पर बैठकर अख़बार पढ़ रहे हैं।]

दादा : क्यों बच्चों, आज इस समय तुम लोग घर पर कैसे? मुझे आश्चर्य हो रहा है। हमेशा तो तुम्हारी मां इस समय तक तुम लोगों को खेल के मैदान से, या फिर पड़ोसियों के घर से बुला-बुलाकर थक चुकी होती है।

अभिजीत : हम दोनों ने तय किया है कि आपसे बात नहीं करेंगे।

नंदा : हमने तो यह भी सोचा था कि हम आपको यह बात भी नहीं बताएंगे।

दादा : नहीं-नहीं ऐसा मत करना बच्चो। इस घर में तुम लोगों के अलावा मुझसे बात करने के लिए किसके पास फुर्सत है? तुम्हारे पिता जी के पास तो बिल्कुल समय नहीं होता और.........मां के पास......।

नंदा : मां के बारे में नहीं बोलने दूंगी कुछ भी।

अभि : लेकिन दादा जी आप क्यों नहीं डांटते पिता जी को?

दादा : मैं! मैं डांटूं तुम्हारे पिता जी को?



नंदा : हां ख़ूब डांटिए। हमें खेल कर आने में ज़रा देर हुई कि कितना डांटते हैं पिता जी। आज अभि का जन्मदिन है और उन्होंने जल्दी आने का वादा भी किया था। लेकिन फिर भी अभी तक नहीं आए। अगर मैं दादा जी होती न, तो.......

दादा : तो क्या करती बेटी?

नंदा : पिता जी को कान पकड़कर उठक-बैठक लगवाती।

अभि : क्या? तू पिता जी को उठक–बैठक लगवाती?

नंदा : मैं नहीं, मैं दादा जी होती न तब!

दादा : वैसे ग़लती तो हुई है तुम्हारे पिता जी से।..........तुम्हारी मौसी की तबियत ठीक नहीं है इसीलिए तुम्हारी मां भी दो दिन से घर पर नहीं है। नहीं तो अभि को अच्छा लगने वाला श्रीखंड हमें भी खाने को मिल जाता।

अभि : देखा नंदा! जन्मदिन को याद रखने के लिए दादा जी को सिर्फ़ श्रीखंड की ही याद आई। जैसे श्रीखंड के अलावा कोई और चीज़ हमें अच्छी ही नहीं लगती।

नंदा : और नहीं तो क्या। पिछले महीने जब मेरा जन्मदिन था तो मां का पहला सवाल था, नंदा बताओ क्या पसंद है तुम्हें। गुलाबजामुन बनाऊं या रसगुल्ले? ***(मां की आवाज़ की नकल करती है)***

दादा : क्यों शैतान, और इतनी महंगी फ्रॉक ख़रीदी वो?

नंदा : मुझे नहीं चाहिए फ्रॉक ब्रॉक। पड़ोस की नीलू का देखा और मेरे लिए भी ले आईं। मुझे किताबें चाहिए।

दादा : क्या? अभी स्कूल खुले छः महीने नहीं हुए और तुम्हारी किताबें गुम गईं?

अभि : दादा जी, नंदा स्कूल की किताबों के बारे में नहीं कह रही है! हमें चाहिए कहानी की किताबें।

दादा : अरे लेकिन ....। सालगिरह पर मिठाई और कपड़े आए तो क्या बिगड़ गया?

नंदा : अब दादा जी आप ही बताइए, मंझले चाचा की सुमति की शादी तो कपड़े, मौसी के रघु का मुंडन तो कपड़े, दशहरा आया तो कपड़े, दीपावली आई तो कपड़े, मिठाई और पटाखे। हमें जो कहानी की किताबें चाहिए वो लेने के लिए क्या कोई भी त्यौहार नहीं होता?

अभि : होता कैसे नहीं? बहुत अच्छा त्यौहार है लेकिन पिता जी को याद आए तब न?

नंदा : मुझे लगता है पिता जी तुम्हारे जन्मदिन के लिए कुछ लाने बाज़ार गए होंगे। आते से ही कहेंगे.........

अभि : ***(पिताजी की नकल करते हुए)*** अभि ओ अभि, बेटा देर हो गई, वो ..... अपने वो मिल गए थे।

नंदा : अच्छा मिला तो मिला, छोड़ ही नहीं रहा था, बहुत बातूनी है। उसकी बातें ख़त्म ही नहीं हो रही थीं।

दादा : ***(दरवाज़े की तरफ देखते हुए)*** बच्चो अब बहुत हो गया। लो आ गए तुम्हारे पिता जी। अब मैं ही पूछता हूं।

पिता : ***(जल्दी-जल्दी आते हुए)*** अभि ओ अभि, आज तुम्हारा जन्मदिन है इसलिए आफ़िस से आधा घंटा पहले निकला। पर रास्ते में अपना वो मिल गया था वो.............

दादा : देखो राघव तुम्हारे ये बहाने, शब्द और वाक्यों के साथ याद हो गए हैं बच्चों को। अरे आज इस बच्चे का जन्मदिन है, तुम्हें याद भी है कि नहीं?

पिता : क्या मतलब? यही तो मैं बता रहा हूं कि मुझे देर क्यों हो गई। अभि, इन सारी थैलियों में तुम्हारे जन्मदिन के तोहफ़े हैं।

नंदा : देखने की क्या ज़रूरत, मैं बताती हूं क्या लाए हैं। आम की बर्फी और श्रीखंड।

पिता : बिलकुल ठीक और नया टीशर्ट, पेंट और बायस्कोप, जो तुमने मांगा था।

अभि : देखा नंदा मिठाई, खिलौने, कपड़े! बस हो गया हमारा जन्मदिन!

पिता : अरे लेकिन, पिछले साल जन्मदिन पर तुम बायस्कोप के लिए ज़िद कर रहे थे न।

अभि : हां, मैंने की थी ज़िद। मगर पिछले जन्मदिन पर मांगी हुई चीज़ इस साल मिलेगी? पिता जी मुझे एक बात बताइए, हमें कुछ देने के लिए आप जन्मदिन का इंतज़ार करेंगे। जन्मदिन का मतलब क्या दीपावली है कि गुजिया कहा तो दीपावली का इंतज़ार करना पड़ेगा।

नंदा : पिता जी, अभि भैया ने बायस्कोप ख़ुद बना लिया है। इसके लिए उसे ईनाम भी मिला है। वो अनिल के पिता जी हैं न। वो उसे हर जन्मदिन पर किताबें देते हैं। उसी की किताबों में से देखकर अभि ने बायस्कोप बनाया है।

पिता : दो-चार रुपए की किताब दस-बीस मिनिट में पढ़ ली, बस ख़त्म। फिर उसका क्या उपयोग? रद्दी ही बढ़ती है घर में। देखिए पिता जी आज डेढ सौ रुपए ख़र्च किए इस लड़के पर, लेकिन इसे चाहिए किताबें।

अभि : हां वो दो-चार रुपए की किताबें। अनिल की किताबें नहीं देखीं आपने। छुट्टी के दिन मोहल्ले के सारे बच्चे उसी के घर जमा होते हैं। कल हमारे सर भी गए थे उसकी लायब्रेरी देखने।

पिता : तो क्या हुआ? अपने घर भी बुला लो उन्हें।

अभि : काहे के लिए? श्रीखंड खाने?

पिता : मुझे तो तुम बच्चों का कुछ समझ में नहीं आता। किताबों के लिए बेकार की ज़िद लेकर बैठे हो। पिछली बार वो हवाई जहाज़ की किताब के बारे में कहा था, इतना ढूंढ कर लाया तो कहने लगे कि वो किसी की जीवनी वाली किताब लेकर आ गए हो।

अभि : और नहीं तो क्या, हवाई जहाज़ कैसे बनता है उसकी किताब लाने को कहा था आपको, तो आप राईट बंधु की कहानी लेकर आ गए थे।

पिता : लेकिन तुम बच्चों की किताबें मिलती कहां हैं? कितना घूमना-ढूंढना पड़ता है तब कहीं मिल पाती हैं।

दादा : देखो राघव, बच्चे कहते हैं वो कोई बिल्कुल झूठ नहीं है। किताब हाथ में आते ही कैसे शांत बैठ जाते हैं। हां, मुझे याद आया, वो महादेवशास्त्री हैं न। उन्होंने अपने बेटे के जनेऊ में सब बच्चों को कहानी की किताब भेंट में दी थीं।

पिता : लेकिन अब इस भेंट का क्या?

अभि : पिता जी, लाइए वो थैली। मुझे श्रीखंड अच्छा लगता है इसलिए आप बिना भूले ले आए। लेकिन मुझे किताबें भी अच्छी लगती हैं। कहानियां पढ़ते हुए श्रीखंड खाने में कितना मज़ा आता।

दादा : राघव बच्चों की पसंद बदल गई है। उनकी भूख बदल गई है, ये याद रखो।

पिता : मुझे याद है पिता जी, एक बार मैं देर तक बैठकर पढ़ रहा था। तब, 'ये आंखें फोड़ने का धंधा बहुत हो गया' यह कह कर मेरे हाथ से किताब छीनी थी आपने? आज पोतों के लिए बदल गए हैं आप।

दादा : बदलना ही चाहिए। सच पूछो तो इससे पहले ही बदलना चाहिए थ। कल किसका जुलूस था? सारे बच्चों के हाथों में तख्तियां थीं-

जब-जब नई किताबें घर में आएं
तब-तब हम त्यौहार मनाएं

अभि : पिता जी, दादा जी चलिए। अब याद आया। आप भी चलिए।

पिता : लेकिन कहां?

नंदा : बाल साहित्य यात्रा में आज पुस्तक हंडी का कार्यक्रम है। मैंने माधव चाचा से कहा था टिकिट लाने के लिए।

पिता : वह क्यों आने लगा? बैठा होगा कुछ नाटक-वाटक करता हुआ।

नंदा : कुछ भी अपने मन से मत बोलिए। अरे अभि देखो तो माधव चाचा आ गए।

चाचा : चलो बच्चो, मैं तुम्हारे लिए एक शानदार भेंट लाया हूं। आज अभि का जन्मदिन है। तुमने कहा था न्, इसीलिए तुम्हारे लिए पुस्तक हंडी की टिकटें लाया हूं।

पिता : बार-बार क्या नाटक देखना? किसकी हंडी?

दादा : कहां है दही-हंडी?

अभि : दही-हंडी नहीं पुस्तक हंडी। चाचा, अभी आता हूं तुम्हारे साथ। पुस्तक हंडी में पुस्तकों की भेंट मिलने वाली है, यह सच है न?

नंदा : चाचा मैं भी चलूंगी।

अभि : पुस्तक हंडी, मटकी फोड़ने का खेल है। तुम लड़कियों का वहां क्या काम? लड़कियां क्या मीनार बनाएंगी?

नंदा : हां पता है एक दूसरे की पीठ पर चढ़ना, कंधों पर चढ़ना। और क्या?

पिता : कोई नहीं जाएगा। यह हाथ पैर तुड़वाने वाले खेल खेलने के अलावा कोई और काम नहीं है तुम्हारे चाचा के पास?

चाचा : भैया, इस खेल की ख़ूब चर्चा हो रही है। बाल साहित्य सम्मेलन की पुस्तक यात्रा का कार्यक्रम है यह। तुम भी चलो न। पिता जी, आप भी चलिए।

दादा : नहीं! इन बच्चों को खेलने-कूदने दो। तुम लोग भी जाओ। ***(दादा जी जाते हैं)***

अभि : चलो न चाचा, देर हो जाएगी।

पिता : सोचा था आफ़िस से आने के बाद आराम से लेट कर पेपर पढ़ूंगा। अब यह पुस्तक हंडी।



[पिता, चाचा, अभिजीत, नंदा जाने के लिए स्टेज पर एक चक्कर लगाते हैं। दूर से ढोलक की आवाज़ के साथ घोषणाएं सुनाई देती हैं।]

नहीं चाहिए मिठाई फटाके
हमें चाहिए सुंदर किताबें

अभि : चलो चाचा जल्दी चलो। वो जुलूस देखो कितना आगे निकल गया।

नंदा : अरे, हमारे क्लास की शलाका भी है जुलूस में। पिता जी जल्दी चलिए न।

[चारों स्टेज पर एक चक्कर लगाते हैं। एक ओर से राक्षस का प्रवेश।]

पिता : *(डर कर पीछे हटते हुए)* अभि, नंदा भागो! राक्षस......मुझे लगता है कि सामने के पीपल वाला राक्षस है।

चाचा : नंदा, अभि पीछे हटो। अपन लोग दूसरे रास्ते से चलते हैं।

अभि : पिता जी आप ऐसे डर क्यों रहे हैं? यह पीपल वाला राक्षस नहीं है। अपने रत्नाकर मतकरी के नाटक का राक्षस है यह।

पिता : चलो हटो पीछे। बड़ा आया नाटक वाला राक्षस। आख़िर है तो राक्षस ही ने। जब गर्दनें तोड़कर उसकी माला गले में पहनेगा तब पता चलेगा। नंदा, नंदा। क्या करें इन बच्चों का? अरे माधव देख क्या रहे हो आगे बढ़ो।

चाचा : लेकिन तुम भी आओ न साथ में।

पिता : मैं? नहीं, नहीं तुम ही आगे बढ़ो। आज बच्चे का जन्मदिन है और ये राक्षस सामने आ गया। बच्चों को खा जाएगा। *(राक्षस रोने लगता है)*

नंदा : तुम वो नाटक वाले राक्षस ही हो न? रोओ मत भैया।

राक्षस : रोऊं नहीं तो और क्या करूं? कैसे-कैसे गंदे आरोप लगा रहे हैं मुझ पर। आख़िर कितना सहन करे राक्षस भी। कहते हैं राक्षस मतलब क्रूर, दुष्ट, बच्चों को खाने वाले। *(फिर रोने लगता है)*

अभि : अरे रो क्यों रहे हो? आख़िर तुम्हें कहना क्या है बताओ?

राक्षस : बस मैं यूं ही रो रहा हूं।

पिता : ये बच्चे हैं या हैवान! देखो राक्षस से दोस्ती कर ली।

नंदा : अरे पिता जी। आप आगे तो आइए आपकी भी पहचान करवा देती हूं।

अभि : *(राक्षस से)* लेकिन तुम जा कहां रहे हो?

राक्षस : मैं पुस्तक हंडी में जा रहा था। थोड़ी दूर ही चला था कि रास्ता भूल गया।

अभि : तुम क्यों जा रहे हो पुस्तक हंडी में। पुस्तक हंडी हम बच्चों के लिए है।

राक्षस : ये देखो पुस्तक हंडी का विज्ञापन। इसमें लिखा है यह खेल सबके लिए है। मैं भी हंडी फोड़ने जाऊंगा।

पिता : मैं भी यही कह रहा हूं। माधव चलो अपन वापस चलते हैं। इस क्रूर राक्षस की संगत में नहीं रहना हमें और अपने बच्चों को भी नहीं भेजना। कोई ज़रूरत नहीं है।

राक्षस : ख़बरदार जो कोई यहां से हिला तो। टांगें तोड़कर हाथ में दे दूंगा एक-एक को।

पिता-चाचा : बाप रे।*(घबराते हुए)*।

अभि : टांगें ही तोड़ोगे न?

नंदा : देखो बेकार में हमारे पिता जी और चाचा को डराओ मत। तुम क्या आज नाटक से भाग आए हो?

राक्षस : इस पुस्तक हंडी में जादू का राक्षस और राक्षस का जादू क्या है यह देखना है मुझे। सब बेकार

की बातें हैं। हम राक्षसों के क्या घर-बार नहीं है? कहते हैं राजकुमारी को भगाने वाला राक्षस! बताओ? बताओ? क्या मैं सचमुच दुष्ट हूं।

नंदा : नहीं मेरे भैया। तुम जो कह रहे हो वह सच है। हम को राजकुमारी को भगाने वाले, दूर पहाड़ पर छिपाकर रखने वाले राक्षस की कहानियां अच्छी नहीं लगती।

राक्षस : मैं भी यही कह रहा हूं एक-एक को फाड़कर टुकड़े कर दूंगा।

पिता : मर गए फाड़कर टुकड़े...मतलब... बहुत ही भयंकर प्रकार है। यह तो मौत ही सामने खड़ी है।

चाचा : कौन से मुहूर्त पे हम घर से बाहर निकले थे?

पिता : और नहीं तो क्या? बच्चे का जन्मदिन है आज। श्रीखंड पेट में जाने के बदले हम ही इसके पेट में जा रहे हैं।

राक्षस : देखो बच्चो! यह दुख ही तो मुझसे सहन नहीं होता। इन लोगों को ऐसे डर कर रोते देख मुझे भी रोना आ रहा है ***(रोता है)*** लेकिन नहीं अब मैं नहीं रोऊंगा।

अभि : तो फिर चलो। लेकिन किताबें नहीं फाड़ना। किताबें फाड़ने के लिए नहीं होतीं।

नंदा : हां! सुनों हमारी बहनजी कहती हैं:

एक कथा एक चित्र,
ऐसी किताबें हमारी मित्र।

राक्षस : नहीं फाडूंगा किताबें। अब तो मुझे लो चलोगे?

अभि : पिता जी, चाचा जी! चल रहे हैं न हमारे साथ?

[***राक्षस का हाथ पकड़कर नंदा और अभिजीत चलने लगते हैं पिता जी और चाचा पीछे-पीछे डरते-सहमते चलते हैं।***]

नंदा : अरे पिता जी चलिए न जल्दी। अब तक आप लोग का डर नहीं गया। चाचा अब मैं तुम्हें डरपोक कहूंगी।

चाचा : वो क्यों? मैं-मैं बिल्कुल डरा नहीं हूं। देखो मैं तुम लोगों के आगे चल रहा हूं।

[***अकड़ते हुए चाचा आगे चलने लगते हैं सामने से डायन आती है।***]

पिता : ***(चिल्लाकर)*** नंदा आगे मत जाओ। मायावी डायन है। अभि, वह कोई मंत्र बोलकर तुम्हें कुत्ता, नहीं तो मुर्गा बना देगी।

डायन : ऐसी ही बुरी-बुरी बातें कहो मेरे बारे में। ऐसे ही ताने मार-मार कर अधमरा कर दो मुझे। मैं अच्छी हूं इस पर कोई विश्वास ही नहीं करता।

नंदा : दीदी दुखी मत होओ।

डायन : क्यों न होऊं दुखी। क्यों हमारी ऐसी दशा बना रखी है? पुस्तक हंडी में जितनी भी किताबें हैं डायनों की। सबको ले जाकर समुद्र में डाल दूंगी।

चाचा-पिता : दुष्ट कहीं की। तू ख़ुद ही डूब मर समुद्र में।

डायन : देखो-देखो बच्चो, अब मैं बिल्कुल नहीं छोड़ने वाली तुम्हारे पिता और चाचा को।

[***हाथ में पकड़ी हुई छड़ी घुमाती है।***]

पिता : मर गए, मर गए बच्चे मर गए। इनकी मां को क्या बताऊंगा।

[***बच्चों को शैतानी सूझती है। जब डायन छड़ी घुमाती है तभी नंदा और अभि, पिता और चाचा की तरफ देख कर भोंकने लगते हैं।***]

पिता : देखो, आख़िर हो गया न सत्यानाश।

चाचा : इतने प्यारे बच्चों की बोली को क्या कर दिया? दुष्ट कहीं की।

डायन : सचमुच ही यह बहुत प्यारे बच्चे हैं।

पिता : क्या सचमुच तुमने इन बच्चों को कुत्ता बना दिया! मैं तुम्हारे पैर पड़ता हूं।

चाचा : तेरे को नारियल चढ़ाऊंगा। कहे तो मुर्गा भी, पर इनकी बोली वापस कर दे।

डायन : कुछ नहीं चाहिए मुझे, बस मेरी शर्तें मानो।

पिता : हज़ार शर्तें बताओ। सब मानेंगे, मानता मानेंगे। सब पूरी करेंगे।

डायन : बच्चों को दुष्ट डायनों की कहानी मत सुनाओ। पहली शर्त। दूसरी शर्त है 'डायन का जादू' या 'जादू की डायन' इस तरह की किताबें बच्चों को मत दो। तीसरी शर्त मुझे अपने साथ पुस्तक हंडी में ले चलो।

चाचा : लेकिन पुस्तक हंडी की सारी टिकटें तो ख़त्म हो चुकी हैं।

बच्चे : भौं-भौं, झूठ-झूठ, बड़ों की सब बातें झूठ।

डायन : झूठ बोले। रुको, बच्चो तुम्हारे पिता जी को मुर्गा और चाचा को कुत्ता बनाती हूं।

चाचा : नहीं..... नहीं। ऐसा मत करो, तुम्हारे पैर पड़ते हैं।

[*पिता और चाचा दोनों लेट कर साष्टांग प्रणाम करते हैं।*]

नंदा : बस पिता जी अब बहुत हो गया। हम लोग तो सिर्फ़ नाटक कर रहे थे। कुत्ता थोड़े ही बन गए थे।

राक्षस : चलो दीदी। जल्दी करो। पिता जी, चाचा जी चलिए।

[*सब लोग हाथ पकड़कर-चलना शुरू करते हैं। टारज़न का प्रवेश।*]

टारज़न : या ऽऽ हूं ऽ ऽ ।

चाचा : ये कौन है?

नंदा : चाचा जी यह टारज़न है।

टारज़न : या ऽ ऽ हूं ऽ ऽ।

पिता : क्यों माधव मैट्रिक की परीक्षा के बाद हम लोग इसी की फ़िल्म देखने गए थे न? पिताजी भेजने को तैयार ही नहीं थे।

चाचा : हां वही तो है। और तुम्हें याद है फ़िल्म देखकर तुम (जीने) सीढ़ी की रेलिंग पकड़कर फिसल रहे थे और..........

पिता : भूलूंगा कैसे? उसके बाद ही तीन महिने तक पैर में प्लास्टर चढ़ा रहा था। पर यह टारज़न अब यहां क्या कर रहा है। अभि, नंदा क्या बात है?

नंदा : टारज़न कह रहा है, वो भी पुस्तक हंडी में चलेगा।

चाचा : अरे भई वहां पेड़ पर चढ़कर उछल कूद करनी है क्या?

अभि : क्या चाचा? पुस्तक हंडी मतलब चढ़ना तो होगा ही।

पिता : क्या वहां चढ़ना, उछलना, कूदना होगा, तो चलो वापस घर। मेरी तो अभी से कमर टूट रही है।

नंदा : यह क्या पिता जी! किताबें पढ़ना मतलब आंखें फोड़ना, पुस्तक हंडी में जाना तो पैर तोड़ना। कमाल है, इन बड़ों का बर्ताव भी समझ में नहीं आता।

[*परी का प्रवेश*]

राक्षस : तुम कौन हो?

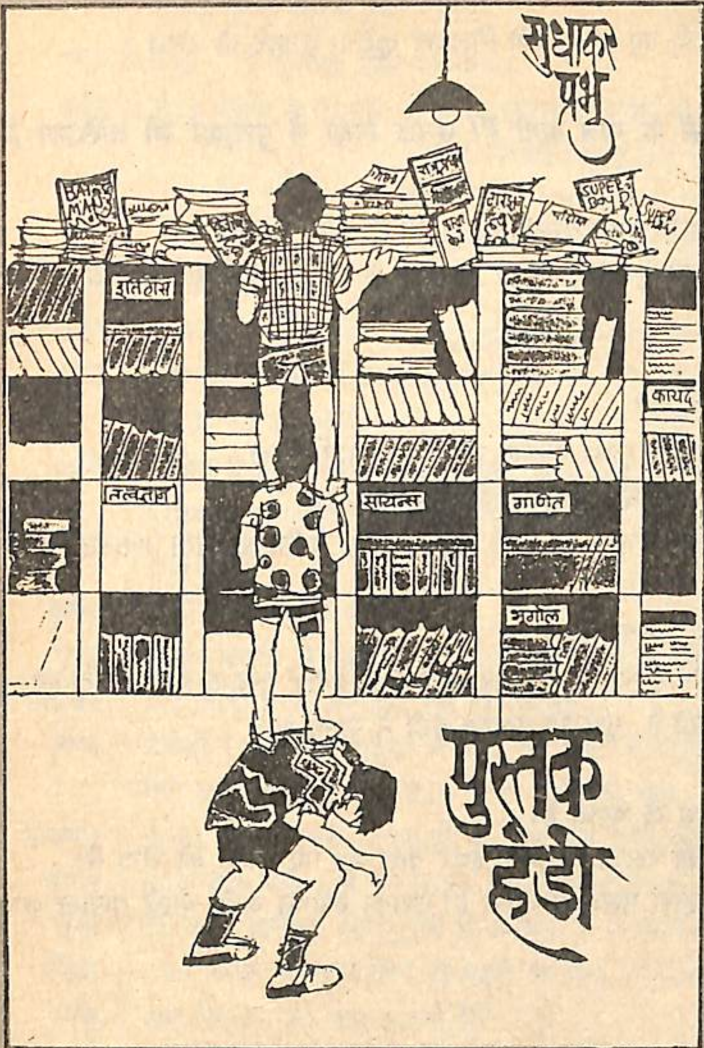
परी : तुम कौन हो? अच्छा, पहचाना तुम बच्चों के पसंदीदा राक्षस हो।

राक्षस : और तुम परी हो न?

पिता : माधव बच्चों को कहो कोई वर मांग लें। बंगला, गाड़ी, कार...।

चाचा : टी.वी., फ्रिज, मोटर सायकल।

पिता : तू भी पागल है, कार होगी तो मोटर सायकल की क्या ज़रूरत है?



इस नाटक के बारे में

*यह नाटक मूलतः मराठी भाषा में है। इसे मराठी बाल कुमार साहित्य सम्मेलन, पुणे के लिए लक्ष वाचक संघ ने प्रकाशित किया है। लेखक हैं **श्री सुधाकर प्रभु**। इन्हीं के सौजन्य से इसे चकमक में प्रकाशित किया जा रहा है।*

वास्तव में यह नाटक मराठी बाल कुमार साहित्य सम्मेलन का प्रचार नाटक है। 'सम्मेलन' महाराष्ट्र के बाल साहित्यकारों की संस्था है जो सरस तथा सुबोध साहित्य प्रकाशित करके कम दामों पर उपलब्ध करवाता है। इस संस्था की स्थापना 1975 में हुई थी।

*इस नाटक में बच्चों के लिए किताबों की... अच्छी किताबों की ज़रूरत को दिलचस्प ढंग से उभारा गया है। नाटक में राक्षस, परी, चूहा, टारजन, डायन, बीरबल, फास्टर फेणे, राजू प्रधान, बालकृष्ण आदि किताबों की तलाश में रहते हैं। इस तलाश के दौरान ढेर सारी बातें उभरती हैं। यहां प्रकाशित नाटक में मूल नाटक के सभी पात्र नहीं लिए जा सके हैं। इसका मराठी से हिंदी अनुवाद **जया विवेक** ने किया है।*

❑ **संपादक**

टारज़न : आप लोग लिस्ट बनाइए। बच्चो, परी आज यहां आई है हमको स्वागत नहीं करना चाहिए?

राक्षस : हम लोग कोई गाना गाते हैं परी के स्वागत में।

नंदा : हम लोग? पागल हो क्या? परी हमेशा पत्तों में, फूलों में बैठकर गाना गाती है। उसकी आवाज़ से पेड़ों के फूल खिलने लगते हैं।

अभि : पक्षी गाने लगते हैं।

डायन : गाओ न तुम्हारा गाना।

अभि : तुम्हें गाना अच्छा लगता है?

डायन : बच्चो मुझे दुनिया की सारी सुंदर और अच्छी बातें सुनने की इच्छा होती है लेकिन हमारे नसीब में तो गालियां और तानें हैं।

नंदा : परी दीदी गाओ न एकाध सुंदर सा गीत।

परी : गीत फिर कभी, अभी जाती हूं, बच्चो। आज बच्चों को अच्छे-अच्छे सपने दिखाने की ज़िम्मेदारी मुझ पर है। ***(जाती है)***

नंदा : बहुत हो गया अब पुस्तक हंडी में जाना है या नहीं?

सब : जाना है।

टारज़न : फिर दोस्तो, जल्दी करना होगा। पुस्तक हंडी का समय हो रहा है।

अभि : लेकिन ज़रा रुकिए। मेरे दोस्त आने वाले हैं।

टारज़न : रुकेंगे। रुकेंगे क्यों नहीं। पुस्तक हंडी का मज़ा सभी मिलकर लूटेंगे। तुम्हारे वो दोस्त ....

नंदा : अभि, देखो वो आ गए।

[*मराठी की प्रसिद्ध बाल कथाओं के पात्र आते हैं। उनके हाथों में पुस्तकों की तख्तियां हैं। और पुस्तक हंडी की घोषणा है।*]

राक्षस : अच्छा ये हैं तुम्हारे दोस्त। अरे यह तो साने गुरुजी का श्याम है। और ये कौन है?

नंदा : यह है 'भा.रा. भागवत' का 'बहादुर फास्टर फेणे'। और वो है 'वि.वि. बोकिल' का 'बसंत'। वो 'सुधाकर प्रभु' का 'राजू प्रधान'।

पेंद्या : रुको।

अभि : तुम कौन हो हमारा रास्ता रोकने वाले?

पेंद्या : मैं पेंद्या *(मनसुखा)* हूं। इस बाल मुकुंद कृष्ण गोपाल का दोस्त, मार्ग दर्शक..........!

अभि : *(बीच में टोककर)* ...... इत्यादि, इत्यादि। चलो छोड़ो हमारा रास्ता।

कृष्ण : यह रास्ता मथुरा को जाता है। इस रास्ते से जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति से चंदा इकट्ठा करना हमारा काम है।

नंदा : चंदा हमने कभी का दे दिया,ये रहा हमारा पास।

पेंद्या : *(पास देखते हुए)* पुस्तक हंडी! अरे कृष्ण, ये मज़ेदार बात देखी क्या? पुस्तक हंडी के टिकिट।

कृष्ण : *(खुशी से)* अरे यही वो पुस्तक हंडी है, मुझे भी पुस्तक हंडी में जाना था।

फा. फेणे : किसी ने रोका है क्या?

अभि : पिता जी चलिए इन्हें भी अपने साथ ले चलते हैं।

चाचा : कृष्ण! उधर वो मथुरा के बाज़ार का रास्ता छोड़कर इधर कहां आ गए बंदरों की सेना में।

पिता : क्या? अरे ये तो युगों-युगों का तुम्हारा पसंदीदा दोस्त है। उसका स्वागत करो। बोलो गोपाल कृष्ण की जय।

बच्चे : गोपाल कृष्ण की जय।

पेंद्या : बालमुकुंद की जय।

बसंत : आया-आया रे माखन चोर।

सब : आया-आया रे माखन चोर।

कृष्ण : *(चिल्ला कर)* रोको-रोको ये गाना। सब मुझे माखन चोर कहते हैं। मुझे बहुत चिढ़ है इस पदार्थ से। मैं क्या उठते-बैठते यही काम करता हूं। बच्चों को सिर्फ़ खाने का ही काम होता है क्या?

बसंत : और नहीं तो क्या? अभी भी तुम्हारे कपड़ों से दही और मक्खन की खुशबू आ रही है।

श्याम : हमें भी ले चलो न एक बार तुम्हारे गोकुल में।

कृष्ण : ले चलूंगा कभी। लेकिन दोस्तों अभी तो पुस्तक हंडी में चलो। मेरी भी इच्छा थी कि कहानियों की किताबें पढ़ूं। मेरे गोकुल वासियों को तो यह बात कभी समझ नहीं आई। बिलकुल दम घुटने तक उन्होंने मुझे दूध दही में मथ दिया। मुझे भी पुस्तक हंडी में चलना है।

चाचा : पर ये मथुरा का दही-दूध का चंदा वसूलने का काम?

कृष्ण : वो काम अपना यह पेंद्या करेगा।

पेंद्या : वाह रे वाह। मतलब तुम अकेले ही पुस्तक हंडी में जाओगे। कृष्ण तुम अपनी गाएं सम्हालो, हम तो जा रहे हैं अपने गांव।

कृष्ण : पेंद्या! ऐसा क्यों कहता है रे, तुझे छोड़कर क्या अकेला खाऊंगा मैं। फिर वो प्रसाद दही हंडी का हो या पुस्तक हंडी का। मेरे आने तक यहीं रुको, इन गायों को सम्हालो।

[सभी लोग चलने लगते हैं।]

सब : चलो चलो पुस्तक हंडी को चलो।

अभि : चलो जल्दी करो। अब हंडी का समय हो गया। वो देखो हंडी वाले आ गए।

झुको अब फटाफट फटाफट फटाफट
सीढ़ी लगाओ फटाफट फटाफट फटाफट
ऊपर चढ़ो फटाफट फटाफट फटाफट

नंदा : ये फटाफट-फटाफट क्या है?

कवि : ये बच्चों की कविता है। बच्चों को इस तरह के गीत अच्छे लगते हैं।

अभि : कुछ तो भी! बच्चों को ताल सुर अच्छा लगता है इसलिए कुछ भी खट-खट, फट-फट बच्चों को सुनना पड़ेगा क्या?

कवि : लेकिन ये अच्छे शब्द हैं। खट-खट, फट-फट।

[डायरी खोलकर लिखने लगता है। उधर पुस्तक हंडी में बच्चे-एक दूसरे पर चढ़कर मीनार बनाते हैं।]

कृष्ण : ये सीढ़ी किसने बनाई?

पेंद्या : ***(एक लड़के से)*** कौन, तुम ऊपर चढ़ोगे? हंडी फोड़ने का अधिकार तो हमारे कृष्ण को ही है।

लड़का : वाह सीढ़ी हमने बनाई है हम ही चढ़ेंगे।

कृष्ण : दोस्तो लड़ो मत। गोकुल में दही की हंडी मैं फोड़ता था। सच बताऊं ये पुस्तक हंडी फोड़ने की मेरी बड़ी इच्छा है। तुम लोग अगर पेंद्या की बात मान लो तो मेरी इच्छा पूरी हो जाएगी।

लड़का : ज़रूर फोड़ो। लेकिन किताबों का मेवा इन सभी को मिलना चाहिए।

कृष्ण : आज तक दही हंडी का प्रसाद भी मैंने अकेले नहीं खाया। पुस्तकों का प्रसाद भी सबको मिलेगा।

सभी : तो चलो, कन्हैया आज तुम्हें ही फोड़नी है ये मटकी भी।

पिता : रुको किसी भी शुभ काम से पहले भगवान को याद करना चाहिए।

अभि : अब भगवान को क्या कहना है?

पिता : अरे माधव अपने बाबा साहेब पुरंदरे जी का किया हुआ आव्हान बच्चों को सुनाएं। सुनो सब। हमारे देश में, ढोरों को खाने के लिए हरी कोपलें और बच्चों को खेलने के लिए मैदान मिलने दो।

सब : हां, मिलने दो।

चाचा : उनके ओठों पर पत्तों पेड़ों की हरियाली के गाने खिलने दो।

सब : हां, खिलने दो। ।

पिता : इस देश के हर स्कूल के पुस्तकालय बाल साहित्य से भर जाने दो।

सब : हां, भर जाने दो।

चाचा : हर मां-बाप को उनके बच्चों के मन की पुस्तकों की भूख समझने दो।

सब : हां, समझने दो।

पिता : बाल साहित्य पढ़ने से, उसके चिंतन से बच्चों के मन में सत्यं-शिवं-सुंदरम् जगने दो।

सब : हां, जगने दो।

चाचा : बाल साहित्य की ये पुस्तक हंडी घर-घर पहुंचने दो।

सब : हां, घर-घर पहुंचने दो।

[लेझिम की ताल पर कृष्ण ऊपर चढ़ता है। हंडी की पुस्तकें बाहर फेंकता है। बच्चे पुस्तकें उठाते हैं।]

सभी चित्र : हिमांशु



क्यों... क्यों ... 23

क्यों.... क्यों .. कालम का हमारा एक उद्देश्य तो पूरा होता दिख रहा है। ज्यादातर पाठक अब अपने आसपास फैली मान्यताओं पर सवाल उठाना सीख रहे हैं। लेकिन इन सवालों के जवाब खोजना या खोजने के प्रयास करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

इस कालर्म में हमने पहले भी तुम्हारे द्वारा भेजे गए सवालों को प्रकाशित किया है। इस बार का सवाल *हाटपीपल्या, देवास के प्रवीण कुमार झा* ने भेजा है।

सवाल है कि **खाली झूले को, खासकर छोटे बच्चे के झूले को, झुलाने से क्यों मना किया जाता है।**

तुमने भी सुना होगा। हमने भी सुना है और जब इसका कारण पूछा तो कहा गया कि **खाली झूला झुलाने से बच्चे का पेट दुखता है।** इसके साथ ही एक सवाल और, **छोटे बच्चों को गुदगुदी करके या वैसे ही बहुत हंसाने को मना किया जाता है। कहा जाता है ज़्यादा मत हंसाओ वरना फिर उतना ही रोएगा।**

इन बातों के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? और ऐसा क्यों कहा जाता है? अपने विचार हमें **15 दिसंबर 1992** तक भेज सकते हो।

क्यों..क्यों... 19 : लू और प्याज

अप्रैल, 92 अंक में हमने 'लू से सावधान' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया था। इस लेख में लू से बचाव के तरीक़े भी बताए थे। इस अंक का क्यों.... क्यों सवाल भी लू से संबंधित था। सवाल शायद तुम्हें याद हो। चलो एक बार दोहरा लेते हैं।

'लू से बचने के लिए तरह-तरह के उपाय किए जाते हैं। ऐसा ही एक उपाय है प्याज को जेब में रखकर घूमना। कुछ लोग कांख में दबाकर भी रखते हैं। कहते हैं ऐसा करने से लू नहीं लगती। क्या सचमुच प्याज जेब में रखने से लू नहीं लगती? ऐसा क्या करती है प्याज कि लू न लगे?'

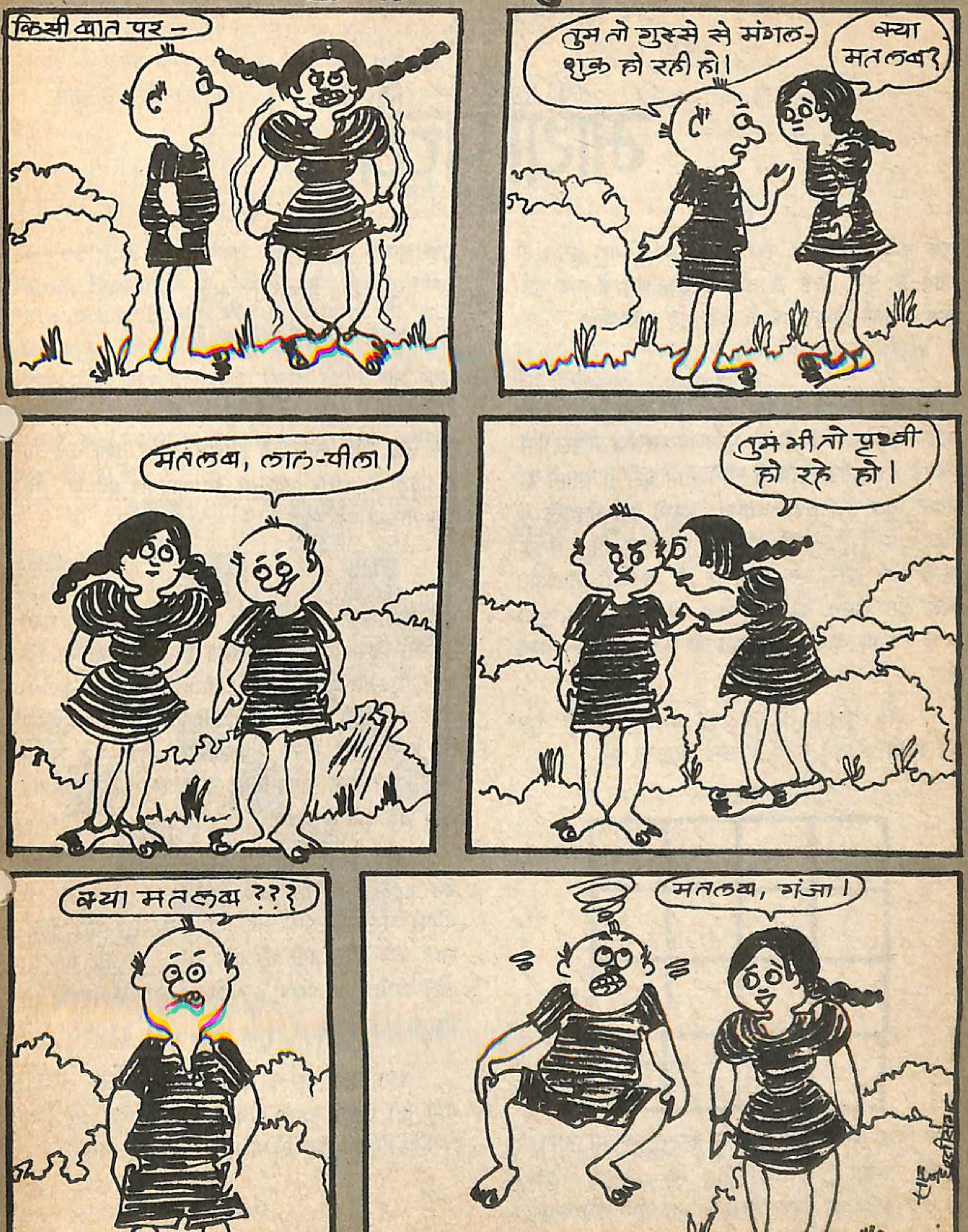
इस सवाल के जवाब में हमें कई पत्र मिले हैं। सबने अलग-अलग कारण बताए हैं। तुम्हारे साथ-साथ हमने भी खोजबीन की। जानकारी यह मिली की प्याज रखने भर से लू नहीं लगे, इस तथ्य के पीछे कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। हां, लू लगने पर घरेलू इलाज में प्याज का ताज़ा रस निकालकर थोड़ी-थोड़ी देर बाद पिलाने और पैरों के तलुओं, हथेलियों में लगाने के लिए कहा जाता है। पर यह भी लू लगने के बाद। जहां तक लू से बचाव का सवाल है तो उसके लिए **तीन बातों का ख्याल रखना ही सबसे ज़रूरी है। 1. सिर व कानों को कपड़े से लपेटकर लपट से बचाना, 2. छाता आदि लगाकर बाक़ी शरीर को धूप से बचाना, और 3. ठंडा पानी पीकर घर से निकलना।**

ध्यान रहे यह ज़रूरी नहीं है कि हर पुरानी प्रथा, परंपरा या रीतिरिवाज़ दक़ियानूसी ही हो, उसके पीछे कोई तार्किक आधार भी हो सकता है। आधार एक या एक से अधिक भी हो सकते हैं। पर यह भी आवश्यक नहीं है कि हर परंपरा या प्रथा के पीछे आधार होगा ही।

जवाब इन पाठकों ने भेजे हैं :-

अयुब खान, कुक्षी, धार। पदम सिंह धाकड़, हिम्मत सिंह, कमल सिंह, छविराम, विक्रम देवेंद्र सिंह, सभी नूरगंज, ग्वालियर। मुकेश कुशवाहा, करकटी, शहडोल। आशीष दलाल, खरगोन। सीताराम मरमट, सुंद्रेल, देवास। हीरालाल सोलंकी, करवड़, झाबुआ। सभी **मध्यप्रदेश।** सुगनराम गौड़, देवराज़ गौड़, ललित भाटी, प्रेम सिंह देवड़ा, अनुराग बी. शर्मा, दिलीप सिंह भाटी, सभी देसूरी, पाली, **राजस्थान।** प्रेमकुमार, पटना, **बिहार।** मनोज कुमार मिश्र, पूरे नैपाल, फ़ैजाबाद, **उत्तर प्रदेश।**

बिंदु • साहु


किसी बात पर –
तुम तो गुस्से से मंगल-शुक्र हो रही हो।
क्या मतलब?
मतलब, लाल-पीला।
तुम भी तो पृथ्वी हो रहे हो।
क्या मतलब???
मतलब, गंजा।



माथापच्ची

(1)

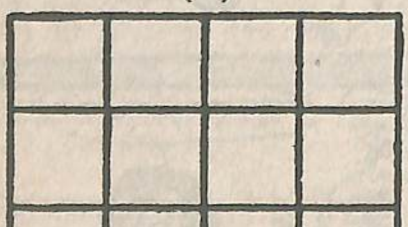
एक टोकरी में अंडे रखे हैं जो हर मिनट दुगने हो जाते हैं। इस तरह से टोकरी एक घंटे में भर गई। अब बताओ टोकरी आधी भरी हुई कब थी?

(2)

बिन्नी की सहेली गुड़िया उसी के मोहल्ले में रहने आई। गुड़िया ने बिन्नी से पूछा कि उसके मोहल्ले में कितने बच्चे हैं? बिन्नी ने सीधे-सादे ढंग से बताने के बदले कुछ इस तरह बताया, "अभी इस मोहल्ले में जितने बच्चे हैं, उतने ही और मिलाओ, फिर उनके आधे और फिर उन आधों के भी आधे में मिलाओ। अंत तुम अपने को भी जोड़ लो। इस तरह कुल बच्चे सौ हो जाएंगे। अब तुम ही बताओ कितने बच्चे हैं।"

अब गुड़िया तो लग गई जोड़-घटाने में। तुम भी सोचो, कितने बच्चे हैं अभी मोहल्ले में?

(3)



इस चित्र को लकीरों पर से काटते हुए दो भागों में इस प्रकार बांटना है कि दोनों टुकड़े (उलट-पुलटकर, घुमा-फिराकर या सीधे ही) एक के ऊपर एक फिट बैठे। इस तरह की छह जोड़ियां संभव हैं। तुम भी कोशिश कर देखो।

(4)

एक सुपारी तीन चोट,

चोट-चोट में दो-दो टुकड़े

कुल बताओ कितने टुकड़े?

(5)

एक ऐसी भिन्न संख्या है जिसमें 4 से गुणा करें या 4 जोड़ दें, उत्तर एक-सा ही आएगा। बताओ, वह भिन्न संख्या कौन-सी है?

(6)

एक दिन लता ने अपनी मां से पूछा कि दीवार घड़ी में डंके किस हिसाब से बजते हैं। मां ने बताया कि घड़ी में जितना समय हुआ होगा उतने डंके बजेंगे। और हर आधे घंटे के लिए एक डंका बजेगा। यानी कि बारह बजे बारह डंके बजेंगे और साढ़े बारह बजे एक। इसी तरह एक बजे, एक डंका बजेगा और डेढ़ बजे फिर एक।

अब लता घड़ी की तरफ टकटकी लगाकर बैठ गई। काफ़ी देर बाद लता ने मां से पूछा, "मैं दीवार घड़ी के आधे घंटे वाले और पूरे घंटे वाले, सारे डंके गिन रही हूं। अब तक 34 हो गए हैं। और अभी 3 बजकर 47 मिनट हुए हैं। बताओ तो कितने बजे से गिनना शुरू किया होगा मैंने?"

लता की मां ने हिसाब लगाना शुरू किया। क्या तुम उनसे पहले बता सकते हो कि जब लता ने डंके गिनना शुरू किया तब क्या बजा होगा?

(7)

घड़ी में सात और आठ बजने के बीच में दोनों सुइयां एक सीधी रेखा में कब होंगी?

(8)

दो घड़ियों में से एक घड़ी एक दिन में दो मिनट पीछे और दूसरी तीन मिनट आगे हो जाती है। ठीक समय मिलाकर चालू करने के बाद उनमें आधे घंटे का अंतर कब हो जाएगा?

(9)

तीन अंक ऐसे सोचो जिनका जोड़ और गुणनफल बराबर हो।

(10)

क्या कभी 11 और 2 एक हो सकते हैं?

वर्ग पहेली-18

यह वर्ग पहली हमें रामेश्वर प्रसाद यदु ने भाटापारा, कोरबा, जिला-रायपुर से भेजी है। इसे थोड़ा संशोधित करके छाप रहे हैं। अगर ध्यान से देखोगे तो इस पहेली की जाली कुछ अलग तरह की लगेगी। इसमें पांच अलग-अलग हिस्से बन गए हैं। जिनके बीच में कोई संबंध नहीं है। सामान्य तौर पर जो जालियां होती हैं उनमें सभी ख़ाली खानों का आपस में संबंध होता है। वे एक दूसरे से जुड़े होते हैं। सं.

1	2	■	3	4	■	5	6
■	7	8	■	9	10	■	
11	■	12	13	■	14	15	■
16	17	■	18	19	■	20	21
■	22	23	■	24	25	■	
26	■	27	28	■	29	30	■
31	32	■	33	34	■	35	36
37			■	38		■	

संकेत : बाएं से दाएं

1. लताओं- झाड़ियों से घिरी हुई जगह (2)
3. सुध का जोड़ीदार, एक ग्रह (2)
5. चिंता (2)
7. वाहन है, नया (2)
9. कसक में दाब (2)
12. रंगों का त्यौहार (2)
14. कपोल-कल्पना में चेहरे का एक हिस्सा (2)
16. बुद्धि (2)
18. जिससे गुड़ और शक्कर बनते हैं (2)
20. माफ़ी (2)
22. बुरी आदत (2)
24. तालाब (2)
27. घुलने में छोटा (2)
29. कसक (2)
31. मैडम.... नाम की एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी (2)
33. मीन-मेख में सीलन है (2)
35. गणित की शब्दावली का एक शब्द (2)
37. छिपी हुई बात (3)
38. बारात में तारों का समय (2)

संकेत : ऊपर से नीचे

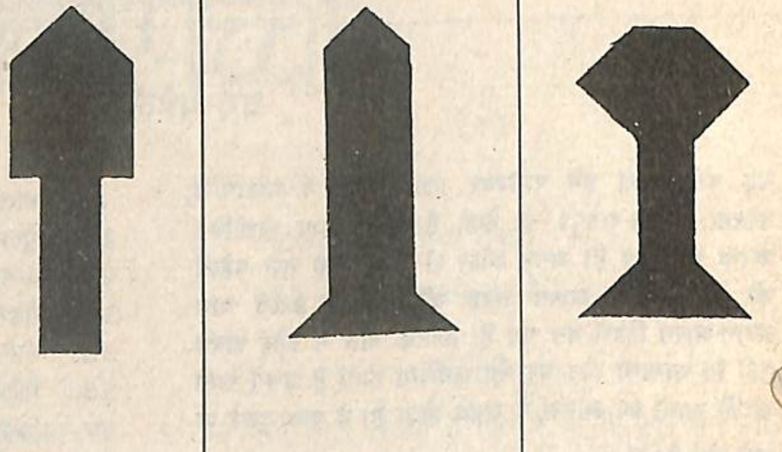
2. भुजरिया में चकमक की सज्जाकार (2)
4. अचानक (2)
6. ख़रीदना (2)
8. आनन-फानन में फ़ायदा (2)
10. सहोदर (2)
11. सांप के आकार की एक मछली
13. घास के ऊगने में चरने वाली भी है (2)
15. 1,00,000 (2)
17. किस का ताड़ बनाया जाता है? (2)
19. कसूर (2)
21. शतरंज के खेल में हार (2)
23. शीत लहर में पेंदी (2)
25. इसका रंग एक ही है! (2)
26. आविष्कार में रोग (3)
28. गेंहू के साथ यह भी पिसता है। (2)
30. किस समय? (2)
32. हमाम की काट-छांट में महीना (2)
34. भक्तिकाल की एक कवियत्री (2)
36. जहां लकड़ी बिकती है (2)

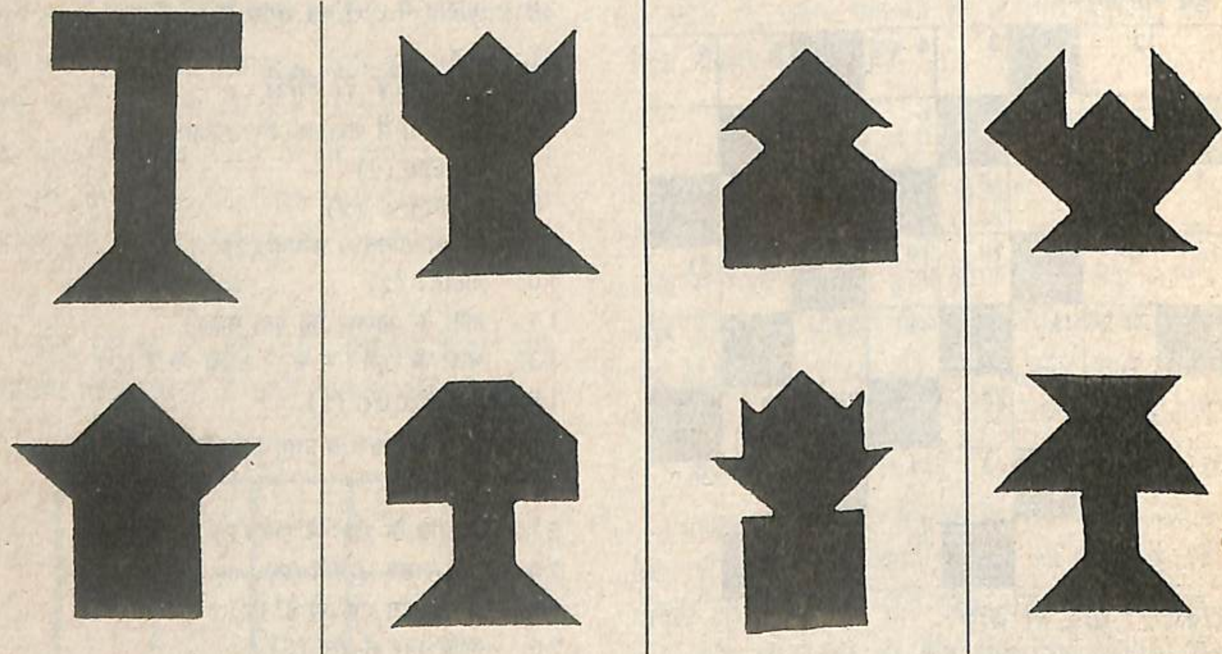
❑ सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को तीन-माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नंबर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-18 का हल दिसंबर अंक में देखें।

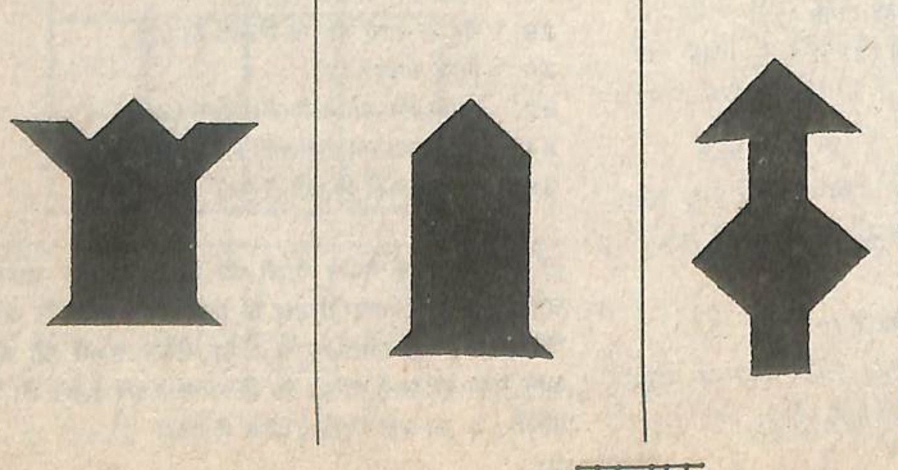
खेल पहेली



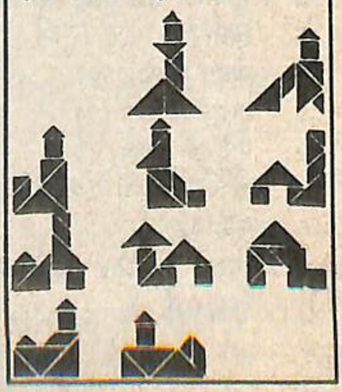
टेनग्राम के इन सात टुकड़ों को जोड़कर यहां दी गई विभिन्न आकृतियां बनी हैं। तुम भी बना देखो। (हल अगले अंक में)







हल सितंबर, 92 अंक के



वराहमिहिर

ज्योतिषशास्त्र बहुत पुराना विषय है। हज़ारों साल पहले का मानव भी आकाश के चमकीले तारों को निहारता था। वह उन तक पहुंच नहीं सकता था, उनकी दूरियों को सही-सही जान नहीं सकता था। उनके भौतिक गुणधर्मों को समझ नहीं सकता था। किंतु वह उनकी गतियों को पहचान सकता था, उनकी गतियों का लेखा-जोखा रख सकता था।

पुराने ज़माने के मानव ने धीरे-धीरे यह भी जाना कि सूरज, चांद और सितारों की गतियों में एक प्रकार की नियमितता है। उसने जाना कि चांद की कलाएं घटते-घटते एक दिन ग़ायब हो जाती हैं। उसने जाना कि चांद की कलाएं बढ़ते-बढ़ते एक दिन पूरा चांद बन जाती हैं। उसने जाना कि चांद के पूरे ग़ायब हो जाने या चांद के पूरा प्रकट होने में एक निश्चित समय गुज़रता है। यह काल लगभग स्थिर रहता है। इसके आधार पर समय का हिसाब रखा जाने लगा। इस समय के आधार पर शिकार करने अथवा फसल बोने या काटने का समय तय किया जाने लगा। धीरे-धीरे चांद्र-पंचांग बनने लगे।

उसने यह भी जाना कि सूरज पूर्व दिशा में हमेशा एक स्थान से उदित नहीं होता। लेखा-जोखा रखते-रखते उसने सूरज की गतियों को पहचाना। उसने जाना कि सूरज के पुनः उसी स्थान से उदित होने में जो अरसा गुज़रता है, उसे एक वर्ष (सौरवर्ष) कहते हैं। इसी प्रकार उसने आकाश के प्रमुख तारों की गतियों को भी पहचाना। सूरज, ग्रह और चांद आकाश के जिस पट्टे में यात्रा करते हैं, उसका बड़ा महत्व है। इस पट्टे को रविमार्ग या **क्रांतिवृत्त** कहते हैं। पुराने ज़माने के ज्योतिषियों ने इस क्रांतिवृत्त को 27 या 28 भागों में बांटा था। क्रांतिवृत्त के इन भागों को या इनके प्रमुख तारों को नक्षत्र कहते हैं। पुराने ज़माने के ज्योतिषियों ने क्रांतिवृत्त में यात्रा करने वाले सूरज, चांद, ग्रहों और तारों का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। बाद में क्रांतिवृत्त को 12 राशियों में बांटा गया।

आज से क़रीब तीन हज़ार वर्ष पहले के हमारे ज्योतिषियों ने ज्योतिष के अध्ययन को बड़ा महत्व दिया था। वैदिक-काल के यज्ञ आदि कर्मों के लिए समय का जानना बड़ा ज़रूरी था। इसलिए उस जमाने के विद्वानों ने ज्योतिषशास्त्र का स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया था। उस ज़माने में छः शास्त्रों का अध्ययन बड़े महत्व का माना जाता था। इन शास्त्रों को **वेदांग** कहा जाता था। इन छह वेदांगों में से एक है **वेदांग-ज्योतिष**। वेदांग-ज्योतिष पर लिखी हुई एक पुस्तक भी मिलती है। इस पुस्तक के रचयिता थे **आचार्य लगध**। यह पुस्तक आज से लगभग ढाई हज़ार साल पहले लिखी गई थी।

एक हज़ार साल का लंबा अरसा गुज़रा। आर्यभट का समय आया। इस बीच हमारे देश में ज्योतिषशास्त्र पर कई महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे गए होंगे। पर आज वे ग्रंथ नहीं मिलते। हां, दूसरे ग्रंथों में उस समय के ज्योतिष-शास्त्र के बारे में छुटपुट उल्लेख अवश्य मिलते हैं। परंतु हम निश्चित रूप से जानते हैं कि इस अरसे में ज्योतिषशास्त्र के सिद्धांत-ग्रंथों की रचना हुई थी। इन्हीं सिद्धांत-ग्रंथों के आधार पर वराहमिहिर ने अपना प्रसिद्ध **पंचसिद्धांतिका** ग्रंथ लिखा था।

वराहमिहिर और आर्यभट का समय लगभग एक ही है। ये दोनों ज्योतिषी 500 ई. के आसपास जीवित थे। वराहमिहिर के आज कई ग्रंथ मिलते हैं, परंतु उनमें से किसी भी ग्रंथ में उनके जीवन के बारे में ख़ास जानकारी नहीं मिलती। ज्योतिषी जब अपने ग्रंथ को लिखना आरंभ करता है तो उसे गणना के लिए किसी-न-किसी संवत् का चुनाव करना पड़ता है और यह लिखना पड़ता है कि उसने अमुक साल से गणनाएं आरंभ की हैं। वराहमिहिर ने अपने पंचसिद्धांतिका ग्रंथ में गणितारंभ का वर्ष शक संवत् 427 दिया है। शक-संवत् में 78 साल जोड़ने से ईसवी-सन् का साल मिलता है। इसका अर्थ यह हुआ कि वराह ने अपना यह ग्रंथ 505 ई.

में लिखा था। हम जानते हैं कि आर्यभट ने अपना आर्यभटीय ग्रंथ 23 साल की आयु में 499 ई. में लिखा था।

हम नहीं जानते कि वराह का जन्म किस साल हुआ था और मृत्यु ठीक किस साल हुई। हां, बाद के एक उल्लेख से यह जानकारी मिलती है कि वराह की मृत्यु 587 ई. में हुई थी। अतः वराह का जीवनकाल हम ईसा की छठी शताब्दी मान सकते हैं।

वराह कहां पैदा हुए थे, इसके बारे में भी हमें कोई जानकारी नहीं मिलती। दंतकथाओं में कहा गया है कि कालिदास आदि की तरह वराहमिहिर भी विक्रमादित्य के दरबार के नवरत्नों में से एक थे। पर इतिहास में दंतकथाओं के इस विक्रमादित्य के बारे में हमें कोई स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती थी। हां प्रसिद्ध गुप्त-सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय ने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी। 'विक्रमादित्य' उपाधिवाले और भी कई शासक हुए।

वराहमिहिर के पिता का नाम आदित्यदास था और पिता से ही उन्होंने ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त किया था। वराह ज्ञानार्जन के बाद जीविका के लिए अवंतीदेश (मालवा) चले गए थे। उस समय उज्जयिनी (उज्जैन) अवंतीदेश की राजधानी थी। वराह स्वयं लिखते हैं कि कांपिल्लक नगर में उन्हें सूर्य का वरदान प्राप्त हुआ था। यह कांपिल्लक नगर उज्जयिनी के आसपास रहा होगा। वराह सूर्य के उपासक थे।

वराहमिहिर ने ज्योतिषशास्त्र की कई शाखाओं पर ग्रंथ रचे हैं। आज उनके जो ग्रंथ मिलते हैं, वे हैं-लघुजातक, बृहज्जातक, विवाह-पटल, बृहत्संहिता, योगयात्रा और पंचसिद्धांतिका। ये सभी ग्रंथ संस्कृत भाषा में हैं।

'पंचसिद्धांतिका' का अर्थ है पांच सिद्धांत। वराह ने सबसे पहले इसी ग्रंथ को लिखा था। जिन ग्रंथों में ज्योतिष व गणित के बारे में बुनियादी एवं वैज्ञानिक बातों की जानकारी दी जाती थी उन्हें सिद्धांत-ग्रंथ कहते हैं। वराह के पंचसिद्धांतिका ग्रंथ में जो बातें हैं वे मूलतः उनकी अपनी खोजी हुई नहीं हैं। बात यह है कि वराह के पहले हमारे देश में ज्योतिष के पांच सिद्धांत ग्रंथ रचे जा चुके थे। ये पांच सिद्धांत हैं- पितामह-सिद्धांत, वसिष्ठ सिद्धांत, रोमक-सिद्धांत, पुलिश-सिद्धांत और सूर्य सिद्धांत।

वराह के पहले हमारे देश में इन पांच सिद्धांतों के अनुसार ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन होता था। वराह ने पंचसिद्धांतिका ग्रंथ में इन्हीं पुराने पांच सिद्धांतों की जानकारी दी है। इस जानकारी से पता चलता है कि रोमक और पुलिश सिद्धांत पाश्चात्य ज्योतिष पर आधारित थे।

भारत पर सिकंदर की चढ़ाई के बाद भारतीय पंडित यूनानी ज्योतिष के संपर्क में आए थे। यूनान में भी ज्योतिषशास्त्र ने ख़ूब उन्नति की थी। वहां ईसा की दूसरी शताब्दी में **तालेमी** नाम के एक बहुत बड़े ज्योतिषी हुए थे। तालेमी ने भूगोल की अपनी पुस्तक में भारत के बारे में कुछ जानकारी दी है। ईसा की आरंभिक सदियों में यूनानी और भारतीय पंडित एक दूसरे के ज्ञान-विज्ञान से भली भांति परिचित थे। इसीलिए पाश्चात्य ज्योतिष की अच्छी बातों को लेकर भारतीय ज्योतिषियों ने रोमक व पुलिश सिद्धांत बनाए थे।

वराहमिहिर ने अपने ग्रंथ में जिन पुराने पांच सिद्धांत ग्रंथों की जानकारी दी है, वे आजकल नहीं मिलते। वराह ने अपने ग्रंथ में इन सिद्धांत-ग्रंथों की जानकारी देकर हमारा बड़ा उपकार किया है। सिद्धांत-ग्रंथ आज भी मिलते हैं, परंतु ये ग्रंथ वराह के बाद के रचे हुए हैं। पुराने सिद्धांत-ग्रंथ और वराह के बाद के लिखे गए सिद्धांत ग्रंथों की बातों में समानता नहीं है।

कुछ विद्वानों का मत है कि वराह ने यूनान, रोम आदि पश्चिम के देशों की यात्रा करके वहां के ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त किया था। यह भी संभव है कि उन्हें भारत में ही किसी यूनानी विद्वान से पाश्चात्य ज्योतिष की जानकारी मिली हो। पुराने जमाने में भी ज्ञान-विज्ञान का ख़ूब आदान-प्रदान होता था। वराह ने स्वीकार किया है कि यूनानी ज्योतिष भी उच्च कोटि का है। वराह के ग्रंथों में कई यूनानी शब्द मिलते हैं, जैसे क्रिय, ताबुरि, जितुम,

लेय, कौर्प्य, हेलि, होरा, आपोक्लिम, हिबुक, केंद्र आदि।

वराह का दूसरा महत्वपूर्ण ग्रंथ है **बृहत्संहिता**। यह ग्रंथ अपने समय का ज्ञानकोश है। इसमें ज्योतिष की तो चर्चा है ही, अन्य विद्याओं के बारे में भी जानकारी है। इसमें ज्योतिष से संबंधित जो जानकारी है वह अब पुरानी पड़ गई है। इतिहास की दृष्टि से ही अब उन बातों का महत्व है। पर इस ग्रंथ की दूसरी बातें बड़े महत्व की हैं। इस ग्रंथ में उस समय की जनता, उनके रीति-रिवाज़, राज्य और जनपद, नदी और पर्वत, खेती के तरीक़े, मौसम, वास्तुकला, मूर्तिकला आदि के बारे में बहुत सारी बातें दी गई हैं। कई विद्वानों ने वराहमिहिर के समय के ही महाकवि कालिदास के ग्रंथों के आधार पर उस समय की परिस्थितियों के बारे में बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे हैं। वराह के ग्रंथों में भी उस समय की सामाजिक परिस्थितियों के बारे में काफ़ी जानकारी मिलती है। वराह के बृहत्संहिता ग्रंथ के आधार पर कुछ लोगों ने उस समय की सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन करने का प्रयास शुरू किया है। असल में यह काम बड़े महत्व का है। वराह के इस ग्रंथ में बहुत सारी जानकारी है, इसीलिए बाद के ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य आदि ज्योतिषियों ने वराह की ख़ूब स्तुति की है।

आर्यभट शुद्ध ज्योतिषी थे। उन्होंने अपनी पुस्तक में केवल गणित और ज्योतिष का ही विवरण दिया है। पर वराह मिहिर की बात दूसरी है। वराह के ग्रंथों में गणित की चर्चा बहुत कम है, पर फलित-ज्योतिष की बहुत अधिक। जन्मकुंडली आदि बनाने की विद्या को **होराशास्त्र** कहते हैं। वराह ने अपना **बृहज्जातक** ग्रंथ इसी शास्त्र पर लिखा है। **लघुजातक** पुस्तक इस बृहज्जातक का संक्षिप्त रूप है। वराह का **विवाह-पटल** ग्रंथ भी फलित ज्योतिष से संबंधित है। **योग-यात्रा** पुस्तक में वराह ने बतलाया है कि यात्रा पर निकलते समय कौन–सी बातें शुभ होती हैं और कौन–सी अशुभ।

हमारे देश में ऐसे ढेर सारे ज्योतिषी हैं जो ज्योतिष की पुरानी पोथियों के आधार पर भोली-भाली जनता को उनका 'भाग्य' बता कर अपना पेट पालते हैं। ऐसे ज्योतिषी वराह को प्राचीन भारत का सबसे बड़ा ज्योतिषी मानते हैं। कारण यह है कि वराह की पुस्तकों में फलित-ज्योतिष के बारे में बहुत सारी जानकारी मिलती है। होना तो यह चाहिए था कि वराह की अच्छी बातों को ग्रहण कर लिया जाता और अंधविश्वासी बातों को छोड़ दिया जाता।

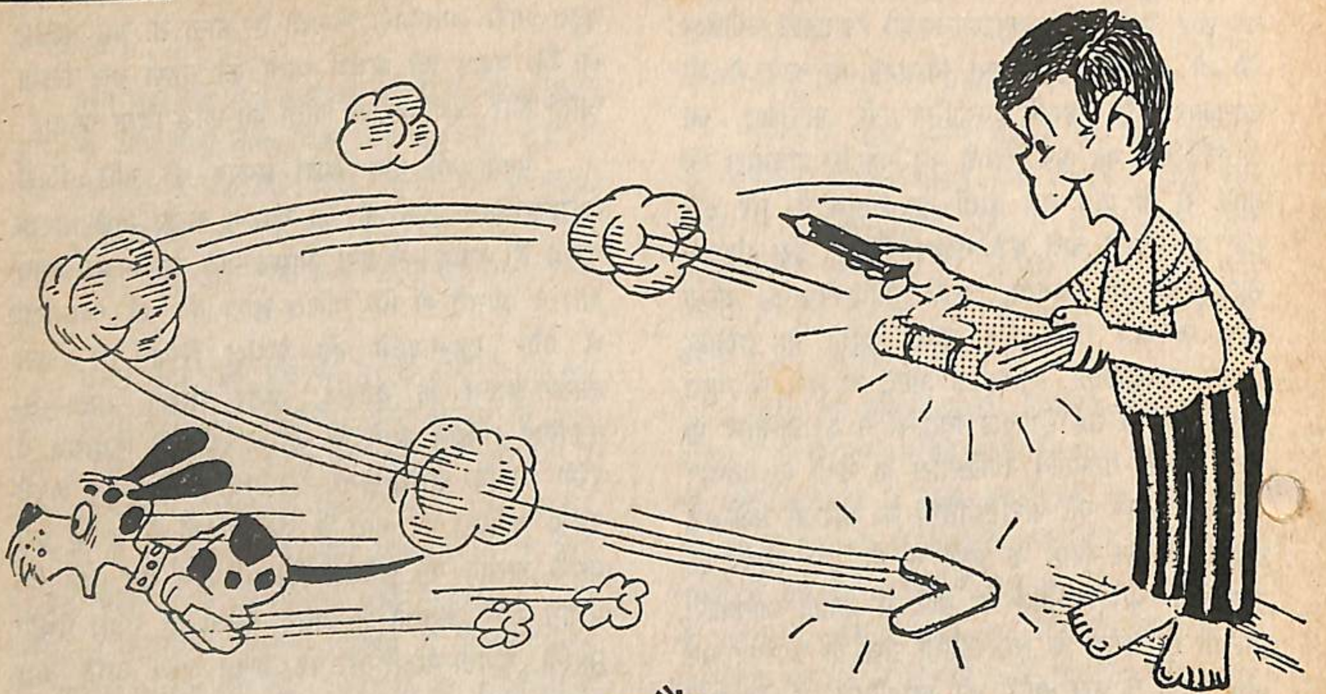
पृथ्वी की एक ख़ास प्रकार की गति, जिसे **आयन-चलन** कहते हैं, के कारण ऋतुएं पीछे सरक जाती हैं। वराह को इस आयन-गति का अच्छा ज्ञान था। वे जानते थे कि गणित द्वारा की गई गणनाओं में और ग्रह-नक्षत्रों की प्रत्यक्ष स्थिति में, इस आयन-चलन के कारण, अंतर पड़ता जाता है। इसलिए उन्होंने आगे के ज्योतिषियों को हिदायत दे रखी थी कि समय-समय पर पंचांग में सुधार करते रहना चाहिए। पर बाद के ज्योतिषियों ने उनके इस अच्छे सुझाव की उपेक्षा की। परिणाम यह हुआ कि पंचांग और ऋतुओं में अंतर बढ़ता ही गया। पंचांग पुरानी गणना-पद्धतियों पर बनते रहे। अभी कुछ दशक पहले स्वतंत्र भारत की सरकार ने जब पंचांग में सुधार करने की एक योजना बनाई, तभी एक नया राष्ट्रीय पंचांग बना है।

हमारे देश में वराहमिहिर के ग्रंथों की बड़ी प्रसिद्धी रही है। दसवीं शताब्दी के एक विद्वान ज्योतिषी **भट्टोत्पल** ने वराह के ग्रंथों पर टीकाएं लिखीं, तो वराह के ग्रंथों को और भी प्रसिद्धि मिली। ग्यारहवीं शताब्दी के प्रथम चरण में मध्य एशिया का एक प्रसिद्ध विद्वान **अल्बेरूनी** भारत-यात्रा पर आया था। वह ज्योतिषशास्त्र का पंडित था और संस्कृत भाषा भी जानता था। अल्बेरूनी ने भारत के बारे में एक ग्रंथ लिखा है। इस ग्रंथ में भारतीय ज्योतिष, विशेषत: वराहमिहिर के बारे में अच्छी जानकारी मिलती है। अल्बेरूनी ने वराह के कुछ ग्रंथों का अरबी भाषा में अनुवाद भी किया था।

आज वराह की अधिकांश बातें पुरानी पड़ गई हैं। पर हमारे देश के प्राचीन ज्योतिष एवं जनजीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए वराह के ग्रंथों का अध्ययन ज़रूरी है।

❑ **गुणाकर मुले**

('प्राचीन भारत के महान वैज्ञानिक' से साभार)



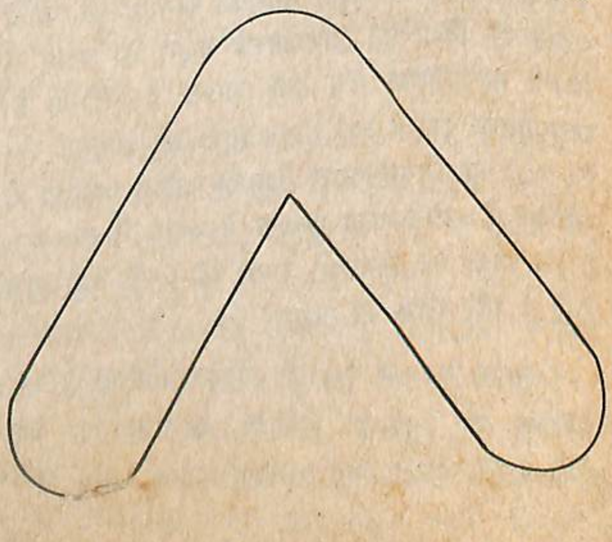
बूमरैंग

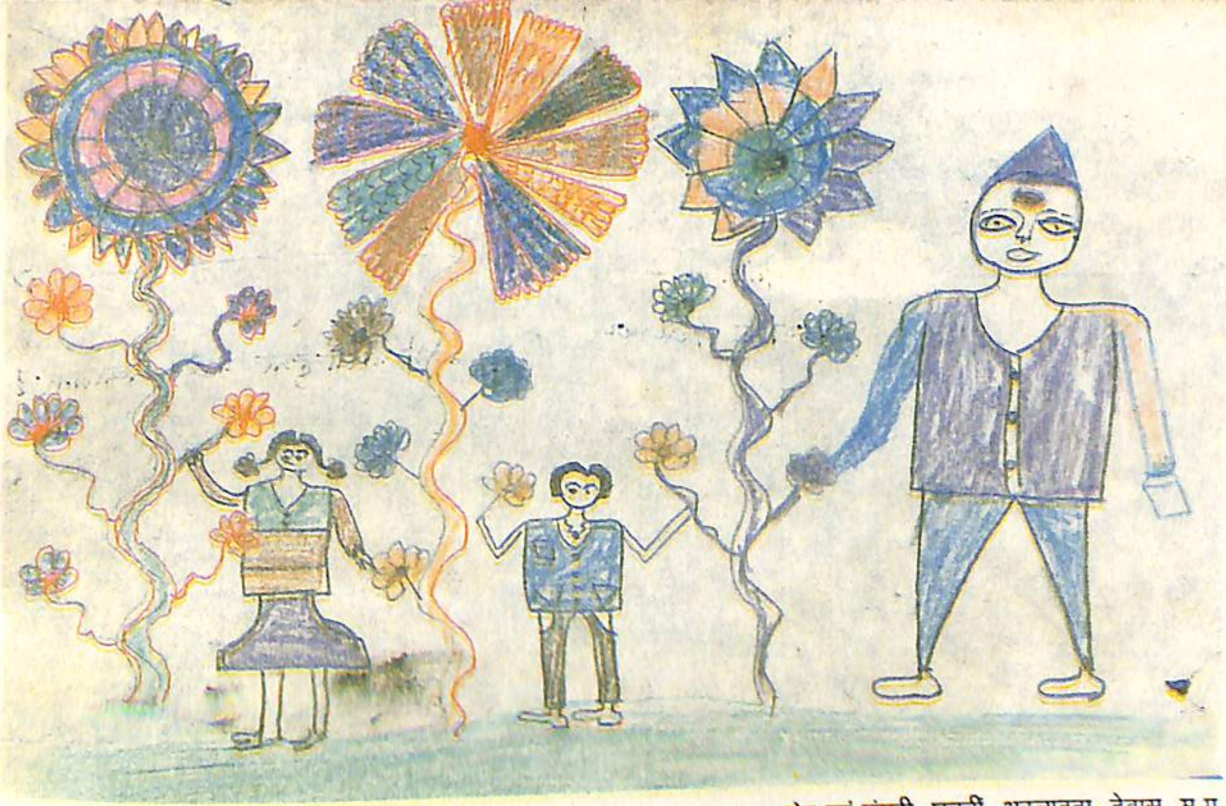
बड़ा अजीब-सा नाम है न? यह ऑस्ट्रेलिया में शिकार के लिए उपयोग किए जाने वाले एक उपकरण (अस्त्र) का नाम है। इसकी ख़ासियत यह है कि शिकार को चोट करने के बाद यह वापिस उस स्थान पर लौट आता है जहां से इसे फेंका गया हो। इससे शिकार का शिकार भी होता है और अस्त्र शिकारी के पास वापिस पहुंच जाता है। बूमरैंग के इस्तेमाल में शर्त सिर्फ़ इतनी होती है कि उसे सही तरीक़े से फेंका जाए।

वैसे तो ऑस्ट्रेलियाई बूमरैंग लकड़ी का बना होता है पर हम लोग इसे काग़ज़ से भी बना सकते हैं। इसके लिए पहले कापी के पुट्ठे पर पेंसिल से यह आकृति बना लो। ध्यान रहे कि आकृति की दोनों भुजाएं बराबर हों, छोटी-बड़ी नहीं। अब इसे कैंची से काट लो। बस, बूमरैंग तैयार है।

इसे चलाने के लिए पहले एक हाथ में कोई चपटी चीज़ (कापी/किताब/ पुट्ठा आदि) सामने पकड़ो। उस पर चित्र के तरीक़े से बूमरैंग को रखो ताकि वह आधा किताब पर रहे और आधा बाहर। अब किसी लकड़ी या पेंसिल से बूमरैंग के बाहर निकले हिस्से को ज़ोर से मारो, बाहर की तरफ़। बूमरैंग उड़ता हुआ दूर जाएगा और चक्कर लगाकर वापिस तुम्हारे पास आएगा। हो सकता है पहली बार में बूमरैंग वापिस आते-आते तुमसे थोड़ी दूर पर ही रुक जाए, गिर जाए। पर थोड़े अभ्यास के बाद तुम्हें उसे किताब पर रखने का सही तरीक़ा और कितने ज़ोर-से मारना है, यह पता चल जाएगा और तुम उसे अच्छे-से चला सकोगे।

□□





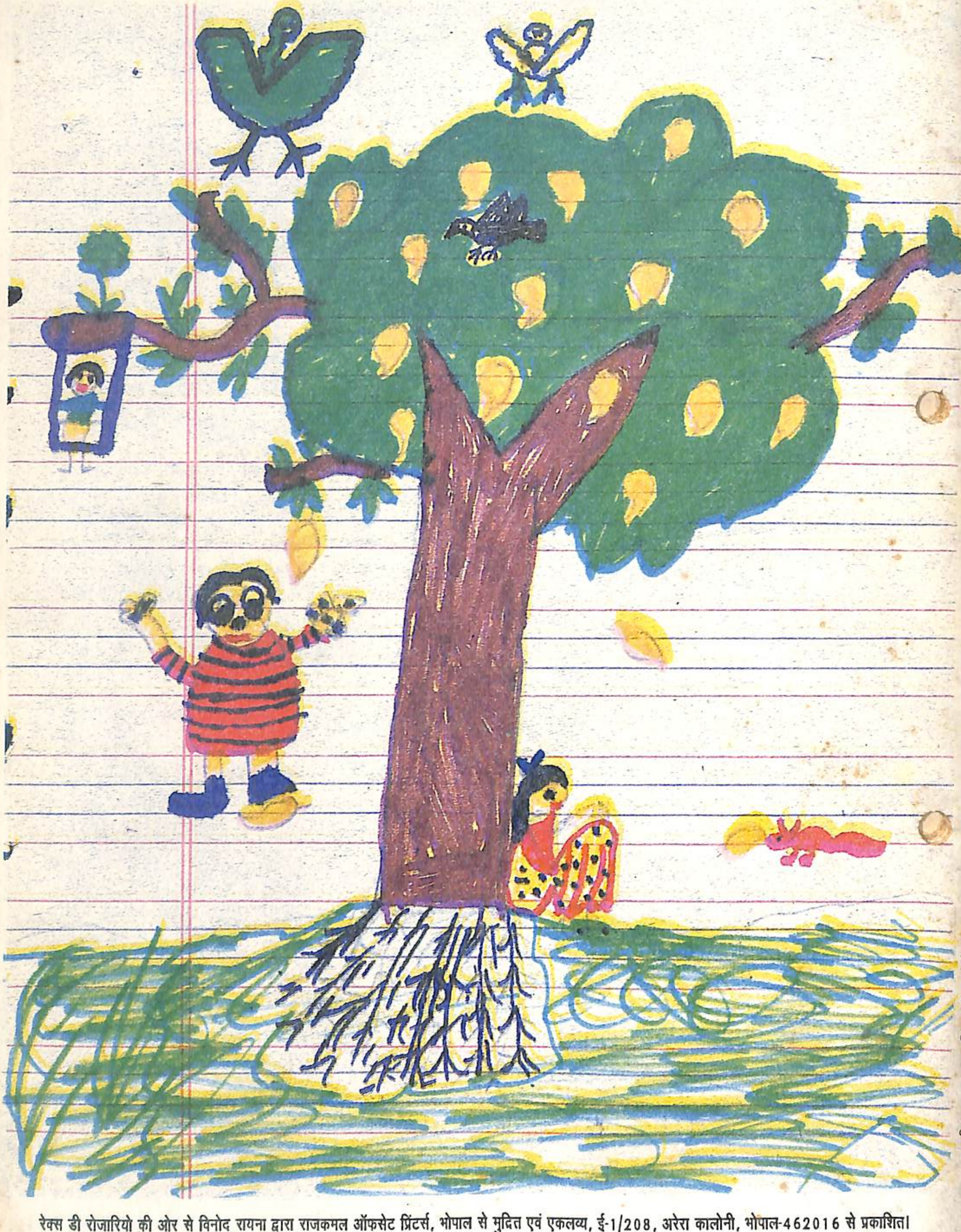
शेर खां मंसुरी, छठवीं, अरलावदा, देवास, म.प्र.



स्वाति, दस वर्ष, दिल्ली

चकमक

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/ 431/92



राशीद खान, आठवीं, सांवेर, इंदौर, म.प्र.

रेक्स डी रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुदित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना